केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 33

जुलाई–सितंबर, 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 28/09/2022 को आयोजित प्रधान कार्यालय के **हिंदी दिवस समारोह** में मुख्य अतिथि डॉ.आलोक कुमार श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक व उप निदेशक यू. आर. राव सैटेलाइट सेंटर, बेंगलूरु (इसरो) मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय को राजभाषा अक्षय योजना के तहत पुरस्कृत करते हुए, साथ में बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल. वी. प्रभाकर, कार्यपालक निदेशकगण श्री देवाशीष मुखर्जी, श्री के. सत्यनारायण राजू एवं श्री बृज मोहन शर्मा भी उपस्थित है।

हिंदी में **कार्यालय नोटिंग सहायिका** का विमोचन करते हुए श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक साथ में, श्री एच. के. गंगाधर, उप महाप्रबंधक एवं मुख्य शिक्षण अधिकारी, सीआईबीएम मणिपाल, डॉ ए. के. पाण्डेय, महाप्रबंधक, नकद प्रबंधन एवं अभिलेख विभाग, श्री योगीश बी. आचार्या, महाप्रबंधक, सीआईबीएम मणिपाल उपस्थित हैं।

श्री एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक
एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री शंकर एस.
मुख्य महाप्रबंधक

श्री जी. एस. रविसुधाकर
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

संपादक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
सुश्री अंकिता कुमारी, परि.अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 2
मुख्य संपादक का संदेश 3
भारत में साइबर कानून: प्रभावशीलता एवं सुधारों की आवश्यकता 4
भूख 8
बैंकिंग के संदर्भ में पारस्परिक संबंध कौशल का महत्व 9
पराया धन 12
पन्ना और मैहर धाम 13
मच्छर साथ दो-दो हाथ 16
काल की परिभाषा 17
बीज की शक्ति 18
मेरी अनुगुल की मनोरम यात्रा 19
मानवीय स्वभाव का अवलोकन 21
ज़िद 22
पेठों का शहर 27
अनुपूरक वेतन (सप्लिमेंट्री सैलरी) 29
हथौड़ा और चाबी (लघु कथा) 31
हे प्रियवर तुम चली आना 32
लोक परम्परा से आगत शब्दों, प्रतीकों, मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों, आख्यानों, मिथकों आदि.... 33
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता शृंखला 38
एकाउंट एग्रीगेटर (एए) 40
विश्व भाषा के पथ पर हिंदी के बढ़ते कदम 42
सावन आया 45
आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान 46
उम्मीदों के बादल 48

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स!

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका केनरा ज्योति के 33वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। आज यह पत्रिका केनरा बैंक में उन सभी लोगों के लिए सशक्त माध्यम बन गई है जो अपने विचारों की अभिव्यक्ति हिंदी भाषा में करना चाहते है। इस अंक में राजभाषा गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रमुख बातों सहित आलेख, कविता, हास्य प्रधान, बैंकिंग विषय एवं सहित्य की अनेक विधाओं को समाहित किया गया है।

कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के लिए हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। हमारे बैंक में केनरा ज्योति का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसके लिए संपादक मडंल बधाई के पात्र है। गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय, विभाग या कर्मचारियों के विचारों, कार्यों और गतिविधियों का प्रतिबिंब होती है। इस प्रकार की पत्रिकाएँ न केवल राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक अपेक्षाओं की पूर्ति में अपितु सरकारी क्षेत्र के कार्यालयों के छवि संवर्धन एवं कार्य की गुणवत्ता में सुधार लाने का भी एक सशक्त माध्यम होती हैं।

हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी एवं शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की वैज्ञानिकता, सरलता, सुबोधता, स्वीकार्यता एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा में हिंदी को संघ की राजभाषा के रुप में अंगीकार किया गया है। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा संबंधी अनुदेशों का पालन करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। केनरा बैंक इन दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रहा है।

मेरा सभी शाखाओं/कार्यालयों से आग्रह है कि वे अपने–अपने कार्यालय में सरल हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल एवं उत्साहवर्धक वातावरण का निर्माण करें जिससे सभी अधिकारी /कर्मचारी टिप्पणियां, मसौदे, पत्राचार मूल रुप से सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित हो और यह पत्रिका कर्मचारियों के कला कौशल में अभिवृद्धि के साथ ही राजभाषा हिन्दी के विकास का मार्ग प्रशस्त करने का एक सशक्त माध्यम बने । मैं आशा करता हूं कि आप सभी इसी तरह राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए अपने कार्यालय एवं बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' का मान बढ़ाते रहेंगे।

एल. वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय साथियों,

केनरा ज्योति के 33वें अंक को आप सभी के बीच रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका नियमित रुप से प्रकाशित हो रही है जिसके माध्यम से न केवल बैंकिंग गतिविधियों से संबंध सूचनाएं उपलब्ध की जा रही है बल्कि स्टाफ सदस्यों की साहित्यिक अभिरुचि को भी जानने का अवसर मिल रहा है। हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका में समाहित सभी लेख ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद रहे। इस बार हमें पर्याप्त मात्रा में अपने कर्मचारियों से स्तरीय लेख प्राप्त हुए है जिससे इस पत्रिका को रोचक बनाने में विशेष मदद मिली है। यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा व साहित्य से आपको परिचित कराती है अपितु बैंकिंग के विभिन्न आयामों एवं नये परिवर्तन से भी अवगत कराती है।

इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए हमारा संकल्प है कि हम सभी अपने ग्राहकों के भाषाई आवश्यकताओं का सम्मान करते हुए अपने कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित करें। हिंदी भव्य है, वैज्ञानिक है, सरल है, और देश की राजभाषा है, जिस पर हम सभी को गर्व है। अपनी मातृभाषा से प्रेम और राजभाषा हिंदी का सम्मान हमारा कर्तव्य है।

यह अत्यंत ही सराहनीय है कि हाल ही में, केनरा बैंक के विभिन्न अंचल कार्यालयों, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं नराकास संयोजन कार्यालय को राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त हमारे बहुत से कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहें है और स्थानीय स्तर पर उनके प्रयासों को चिन्हित भी किया जा रहा है। ऐसे सभी शाखाओं, कार्यालयों को मेरी ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएं।

हम अपने कर्मचारियों से आग्रह करते हैं कि वे बैंकिंग में नवीनतम विषयों पर सरल शब्दों में आलेख/रचनाएं हमें प्रेषित करते रहें जिससे कि सभी पाठक लाभांवित हो सकें।

आपका,

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

भारत में साइबर कानून: प्रभावशीलता एवं सुधारों की आवश्यकता

मोनालिसा पंवार
एकल खिड़की परिचालक
एस.आई.सी., जोधपुर

भारत में ही नहीं बल्कि विश्व भर में आए दिन साइबर हमलों की खबरें आती हैं जिनमें लाखों/करोड़ों लोगों की निजी सूचनाएं सार्वजनिक किए जाने तथा करोड़ों रुपये की साइबर धोखाधड़ी के मामले शामिल होते हैं। कोरोना काल में बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध में लगभग पांच गुना वृद्धि हुई है। हाल ही में युद्ध के खतरों के बीच युक्रेन के रक्षा मंत्रालय, प्रमुख बैंकों तथा सेना पर शृंखलाबद्ध गंभीर साइबर हमले किए गए। इससे नुकसान का आकलन अभी तक नहीं किया जा सका है परन्तु ऐसे हमले वित्तीय नुकसान के साथ–साथ उस देश की संप्रभुता पर घातक प्रभाव डालने में सक्षम हैं। विश्वस्तरीय साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ इस समस्या का हल तलाशने में लगे रहते हैं परन्तु प्रौद्योगिकी में हो रहे तीव्र परिवर्तन के कारण जब तक हम किसी एक समस्या का हल तलाशते हैं तब तक नई समस्या मूंह बाए खड़ी मिलती है।

मोबाइल व डिजिटल बैंकिंग एवं प्लास्टिक कार्ड से तेजी से पांव पसारता साइबर अपराध:

1990 से बैंकिंग उद्योग में शुरू किया गया पूर्णत: कंप्यूटरीकृत का दौर अब ऑनलाइन बैंकिंग से कहीं आगे पहुंच गया है। अब तो डिजिटल बैंकिंग उत्पाद ही नहीं बल्कि डिजिटल शाखाएं खोलने की भी चर्चा है। डिजिटल लेनदेन में ग्राहक की प्रत्यक्ष उपस्थिति आवश्यक न होने से साइबर अपराधी ग्राहकों को अपना शिकार बना लेते। देश में निरंतर बढ़ती स्मार्टफोन की संख्या ने लोगों को डिजिटल लेनदेन में प्रमुख एनईएफटी, आरटीजीएस व अन्य ऑनलाइन लेनदेन के मुकाबले विगत कुछ वर्षों से यूपीआई लेनदेन में भी कई गुना वृद्धि हुई है। सिर्फ जनवरी 2022 में यूपीआई के 4617.15 मिलियन लेनदेन में 831993.11 करोड़ की राशि अंतरित की गई। भारत में आज करोडों एटीएम/डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड उपयोग में हैं तथा इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है जो कि बढ़ते डिजिटल लेनदेन की नई बानगी है। विगत एक दशक में फ्लिपकार्ट, अमेजन और अन्य वेबसाइटों ने ऑनलाइन शॉपिंग महानगरों से गांव–गांव पहुंचा दिया है तथा आने वाले वर्षों में इसमें प्रतिवर्ष 25% की वृद्धि की संभावना है।

पेगासस और रैंसमवेयर: खतरे की घंटी :

विगत कुछ वर्षों से रैंसमवेयर नामक साइबर अपराध की संख्या में तेजी ने तो कंपनियों की सुरक्षा पर सेंध तो लगाई ही थी अब महज एक मिस कॉल से आपके फोन में समाने वाले पेगासस ने भी हमारी निजता पर एक नया सवाल खड़ा कर दिया है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साइबर कानून से संबंधित पॉलिसी का अभाव:

इजरायली जासूसी सॉफ्टवेयर पेगासस पर खुलासे के बाद भारत ही नहीं बल्कि दुनिया में बवाल मचा है। परन्तु इससे निपटने हेतु वैश्विक स्तर पर कोई साइबर कानून है ही नहीं, जो देशों को इस तरह की गतिविधियां करने से रोक सके। इसके कारण साइबर अपराधों पर कोई वैश्विक नियंत्रण नहीं है।

भारत में साइबर कानून:

भारतीय संविधान में विभिन्न अपराधों के लिए उपलब्ध कानूनों के अलावा वर्ष 2000 में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के तहत साइबर सुरक्षा हेतु कई कानून भी बनाए गए तथा समयानुसार इसमें कई संशोधन भी किए गए हैं ताकि इन पर नियंत्रण किया जा सके परन्तु भारत जैसे देश में अधिकांश नागरिकों में इंटरनेट एवं बैंकिंग समझ ही नहीं। ऐसे में यहां डिजिटल बैंकिंग बेहद चुनौतीपूर्ण है। इसलिए यहां वित्तीय साइबर धोखाधड़ी संबंधित मामले विश्व में सर्वाधिक हैं। भारत में कुछ प्रमुख साइबर सुरक्षा कानून निम्नानुसार हैं।

हैकिंग:

किसी कंप्यूटर, डिवाइस, इंफॉर्मेशन सिस्टम या नेटवर्क में अनधिकृत रूप से घुसपैठ कर डेटा से छेड़छाड़ करना हैकिंग के तहत आता है। यह सिस्टम की फिजिकल और रिमोट एक्सेस दोनों के जरिए हो सकती है। इसमें आईटी (संशोधन) एक्ट 2008 की धारा 43 (ए), धारा 66, आईपीसी 379 और 406 के अन्तर्गत तीन साल तक की जेल और/या पांच लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान है।

वायरस–स्पाईवेयर फैलाना:

हैकिंग, डाउनलोड, कंपनियों के अंदरूनी नेटवर्क, वाई–फाई कनेक्शनों और असुरक्षित पेन ड्राइव, आदि के जरिए वायरस फैलाने के संबंध में आईटी (संशोधन) अधिनियम 2008 की धारा 43 (सी), धारा 66, आईपीसी की धारा 268, देश की सुरक्षा को खतरा पहुंचाने हेतु फैलाए गए वायरसों पर साइबर आतंकवाद से जुड़ी धारा 66 (एफ) भी लागू (गैर–जमानती)। इसमें साइबर–वॉर और साइबर आतंकवाद से जुड़े मामलों में उम्र कैद/दूसरे मामलों में तीन साल तक की जेल और/या जुर्माने का प्रावधान है।

पहचान की चोरी:

किसी दूसरे शख्स की पहचान से जुड़े डेटा, गुप्त सूचना इस्तेमाल करना, जैसे दूसरों के क्रेडिट कार्ड नंबर, पासपोर्ट नंबर, आधार नंबर, डिजिटल आईडी कार्ड, ई–कॉमर्स ट्रांजक्शन पासवर्ड, इलेक्ट्रॉनिक सिग्नेचर आदि इस्तेमाल कर शॉपिंग, धन की निकासी वगैरह के लिए आईटी (संशोधन) अधिनियम 2008 की धारा 43, 66 (सी, आईपीसी की धारा 419 का इस्तेमाल कर तीन साल तक की जेल और/या एक लाख तक जुर्माने का प्रावधान है।

ई–मेल स्पूफिंग और फ्रॉड:

किसी व्यक्ति का ईमेल इस्तेमाल कर गलत मकसद से दूसरों को ई–मेल भेजना, हैकिंग, फिशिंग, स्पैम और वायरस–स्पाईवेयर फैलाने हेतु इस तरीके का इस्तेमाल ज्यादा होता है। इसमें धोखे से ईमेल पानेवाले की गोपनीय जानकारियां हासिल की जाती है जिसमें बैंक खाता नंबर, क्रेडिट कार्ड नंबर, ई–कॉमर्स साइट का पासवर्ड वगैरह हो सकते हैं। ऐसे अपराध आईटी कानून 2000 की धारा 77 बी, आईटी (संशोधन) अधिनियम 2008 की धारा 66 डी, आईपीसी की धारा 417, 419, 420 और 465 के तहत तीन साल तक की जेल और/या जुर्माना लग सकता है।

लचर सूचना प्रौद्योगिकी इंफ्रास्ट्रक्चर, बढ़ते साइबर अपराध:

केन्द्र सरकार की संस्था सर्ट–इन के अनुसार वर्ष 2020 में 11,58,208 साइबर हमले हुए जबकि 2015, 2016, 2017, 2018, और 2019, 2020 तथा 2021 में क्रमशः 49,455, 50362, 53117, 2, 08, 456, 3, 94, 499, 11, 58, 208 तथा 6,07,220 (जून 2021 तक) साइबर हमले हुए थे। ये वो आंकड़ें हैं जिनकी रिपोर्टिंग हुई है। दरअसल में यह संख्या करोड़ों में हो सकती है।

साइबर कानून की प्रभावशीलता:

व्यावहारिक तौर पर भारत में अपराध का ग्राफ घटने के स्थान पर निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इसका मुख्य कारण है लगभग सभी स्तर पर कानून के अनुपालन में कमी महसूस की जाती है। कई बार जनता पर्याप्त सावधानी बरतने में नाकाम रहती है तो कई बार प्रशासन अपने कर्तव्यों के निर्वहन में असफल साबित होता है। इस अधिनियम में जुर्माने से लेकर उम्र कैद तक की सजा का प्रावधान है तथा निर्दोष लोगों को एक साजिश के तहत फंसाने के लिए की गई शिकायतों से सुरक्षित रखने की भी व्यवस्था है परन्तु कम्प्यूटर, दूरसंचार और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को अमूमन इसकी जानकारी न होने से आम जनता आसानी से साइबर अपराधियों के भंवरजाल में फंस जाते हैं।

4जी/5जी से भी तीव्र साइबर अपराधी: साइबर कानून के अनुसार धीमी कार्रवाई:

भारत में जितनी तेजी से इंटरनेट का प्रचार–प्रसार हुआ उतनी तेजी से इसके उपयोग के बारे में जागरूकता नहीं बढ़ी। जिसके कारण आज भी आम जनता इसके उपयोग की तकनीकी गहराईयों से अपरिचित है। पलक झपकते ऑनलाइन लेनदेन एवं डेटा अंतरण के जमाने में हम बिना उचित सुरक्षा के विभिन्न उपकरणों का इस्तेमाल कर उससे अपना बैंक खाता लिंक कर वित्तीय लेनदेन भी करने लगते हैं। इसका

फायदा उठाकर साइबर अपराधी विभिन्न माध्यमों एवं प्रलोभनों द्वारा आपकी निजी जानकारी जुटाकर पल भर में आपका खाता खाली कर देते हैं। जब तक आपको पता चलता है तब तक तो आपके पैसे आपके खाते से निकलकर कहां से कहां पहुंच जाते हैं। इसमें पूरा नेटवर्क संलग्न है जो बड़ी ही सफाई से अपने शिकार को फंसाता है।

हमारी निजी सूचनाएं यत्र, तत्र सर्वत्र उपलब्ध:

भारत में हमारे पहचान एवं निजी सूचनाओं से युक्त दस्तावेज यथा हमारे आधार, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस लगभग हर जगह उपलब्ध है। देश में किसी भी सुविधा का लाभ उठाने हेतु इन दस्तावेजों को अनिवार्य बनाए जाने के कारण अब हमारी निजी सूचनाएं उतनी निजी नहीं रही। भारतीय व्यवस्था ऐसी है कि कोई भी, कभी भी आपसे आपकी निजी सूचनाएं मांग सकता है और कई बार आपको न चाहते हुए भी वो सूचनाएं देनी पड़ सकती है। इसलिए लोग अपने स्मार्टफोन में निजी दस्तावेजों की प्रतियां रखते हैं। दूसरी ओर वे अपने फोन में अनावश्यक एप्प एवं सॉफ्टवेयर रखते हैं। इतना ही नहीं उनके फोन से लिंक ईमेल, वाट्सएप्प आदि में भी निजी दस्तावेज उपलब्ध होने से साइबर अपराधियों का काम बेहद आसान हो जाता है। इसलिए भारत में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि यदि किसी को आपकी सूचना चाहिए तो उस व्यक्ति की उंगलियों के निशान व अन्य निशान से ही वे लिंक यूज किए जाएं परन्तु भारत जैसे देश में फिलहाल यह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है।

आसान पासवर्ड : हमारा नाम ही हमारी पहचान:

भारत में ऐसे अनेकों मामले मिल जाएंगे जिसमें आपके इंटरनेट बैंकिंग, पासवर्ड, एटीएम पिन एवं अन्य संवदेनशील सूचनाएं आसानी से फोनबुक या वाट्सएप्प में मिल जाएंगे। अधिकांश लोगों का यही कहना है कि कितना पासवर्ड याद रखें इसलिए सबका मालिक एक की तर्ज पर एक समान पासवर्ड उपयोग कर खुलेआम साइबर अपराधियों को सादर निमंत्रण देते हैं। कुछ लोग तो अपनी माँ/पत्नी/ पुत्र–पुत्री के नाम या जन्मतिथि को ही अपना पासवर्ड बनाते हैं इससे साइबर अपराधियों को आपका खाता साफ करने में और आसानी होती है। इससे बचना बेहद जरूरी है।

बैंक शाखा/कोड ही सिस्टम का पासवर्ड:

बैंकर जिनपर ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग के बारे में जागरूक करने का दायित्व है वह भी आजतक bankname@branchcode या bankname@12345 या branchcode@12345 जैसे पासवर्ड से बाहर निकल नहीं पाए हैं। ऐसे में निरंतर बढ़ते साइबर अपराधों की बड़ी संख्या ने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि हम इस दिशा में आगे कैसे बढ़ें। इस पर चर्चा करने या सोचने का वक्त आ गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज हम और हमारी निजता ही नहीं बल्कि हमारे वित्तीय लेनदेन भी असुरक्षित होते जा रहे हैं।

साइबर हेल्पलाइन नम्बर 155260– बेहद प्रभावी:

गृह मंत्रालय ने साइबर धोखाधड़ी से होन वाले वित्तीय नुकसान से बचाव एवं डिजिटल भुगतान में विश्वास जगाने हेतु हेल्पलाइन नम्बर 155260 जारी किया है। इसके अन्तर्गत राज्य पुलिस और बैंक साइबर मामलों से बचाव और समाधान ढूंढने हेतु मिलकर काम करेंगे। यह हेल्पलाइन और इसका रिपोर्टिंग प्लेटफार्म भारतीय रिज़र्व बैंक, सभी प्रमुख बैंक, भुगतान बैंक, वॉलेट और ऑनलाइन मर्चेंट के सहयोग से इंडियन साइबर क्राइम को आर्डिनेशन सेंटर द्वारा परिचालित है। इसमें लगभग सभी बैंक एवं वित्तीय लेनदेन करने वाले संस्थान भी जुड़े हैं। इस सेवा में आपको वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में प्राथमिकी दर्ज करना जरूरी नहीं है। https://cybercrime. gov.in नामक सरकारी पोर्टल पर पीड़ित वित्तीय धोखाधड़ी की सूचना दी जा सकती है।

साइबर कानून में सुधार एवं जागरूकता

साइबर सूचना सुरक्षा में बड़े निवेश के अलावा कड़े कानून बनाना एवं उन्हें लागू करना:

रिसर्च कंपनी गार्टनर के अनुसार भारत में एंटरप्राइज इंफॉरमेशन सिक्योरिटी एंड रिस्क मैनेजमेंट पर होने वाले खर्च 2020 में हुए खर्च 1.97 बिलियन डॉलर की में 9.5% वृद्धि होकर 2021 में 2.08 बिलियन डॉलर होने की संभावना है जबकि क्लाउड सिक्योरिटी में 250% वृद्धि की संभावना है। विगत साइबर हमलों में लगातार वृद्धि होने के कारण अब एक सुरक्षित डिजिटल माहौल किसी भी संगठन के लिए बेहद जरूरी है। इसलिए अब शीर्ष कंपनियां साइबर सुरक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है। सरकार को भी इस संबंध में कड़े कानून बनाकर उन्हें तत्परता से लागू किए जाने से संबंधित व्यवस्था करनी चाहिए। बैंकिंग धोखाधड़ी के मामलों में निरंतर वृद्धि को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में ग्राहकों को साइबर ठगी से बचने तथा सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग हेतु एक मीडिया जागरूकता अभियान भी शुरू किया है।

तीव्र इंटरनेट युग में सुरक्षित इंटरनेट व्यवहार जरूरी

महज एक मिस कॉल से आपके फोन में जर्बदस्ती समानेवाला पेगासस आपके फोन को पूर्णत: नियंत्रण में लेकर आपकी हर गतिविधि की जानकारी देने में सक्षम है। हमें अब तक यह पता नहीं

चल पाया है कि कब हमारा स्मार्ट फोन हमारा ही दुश्मन बन गया। हांलाकि हमें इस सोच से भी उबरना होगा कि भारत सरकार हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करेगी क्योंकि अपनी डिजिटल गतिविधियों पर नियंत्रण कर आपको अपनी सुरक्षा खुद ही करनी होगी। इसलिए हमें साइबर सुरक्षा के महत्व को समझते हुए सावधानी और सतर्कता सहित एक सुरक्षित जीवन शैली की ओर अग्रसर होना होगा क्योंकि जिन सोशल मीडिया पर हमारी पूरी दिनचर्या निर्भर है उनमें से अधिकांश सर्वर भारत में नहीं है। इसलिए हमें अपने मोबाइल/कम्प्यूटर आदि की जांच नियमित कर कोई अनजाना/अनावश्यक एप के अलावा नियमित इस्तेमाल न होनेवाले एप्प भी अपने फोन से हटा दें क्योंकि ऐसे एप हमारे निजी सूचनाएं चुराते हैं। कोई भी एप हमें मुफ्त सेवाएं नहीं देते बल्कि वे हमारी सूचनाओं का इस्तेमाल अपने हित में करते हैं। हमारे फुटप्रिंट्स भी स्पाईवेयर के मददगार होते हैं जिसका इस्तेमाल साइबर अपराधियों के अलावा सरकारी एजेंसिया भी कर सकती हैं। इससे बचाव हेतु हमें नियमित रूप से टूल क्लीन करना चाहिए तथा डिजिटल लेनदेन केवल 'एचटीटीपीएस' से शुरू होने वाली वेबसाइटों पर ही करना चाहिए 'एचटीटीपी'से शुरू होने वाली वेबसाइटों पर नहीं क्योंकि असुरक्षित वेबसाइटों पर लेनदेन करने पर आपके क्रेडिट/डेबिट कार्ड की सूचनाएं चोरी हो जाने का खतरा रहता है।

निष्कर्ष:

देश तेजी से प्रौद्योगिकीय उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है परन्तु हम अभी भी पुराने अंदाज में 'मैं जिदंगी का साथ निभाता चला गया.....

गा रहे हैं। हम साइबर अपराध की गंभीरता समझने की कोशिश ही नहीं कर रहे कि साइबर अपराधी पलभर में हमारी जिंदगी की गाढ़ी कमाई हमारे खाते से उड़ा सकते हैं और हम कुछ नहीं कर पाते। हम अपने जीवन भर की जमा पूंजी खोने के बाद शायद अपने दिल को दिलासा दे भी लें परन्तु यदि साइबर अपराधियों ने छल–कपट से हमारे परिवार की कुछ ऐसी चीजे सार्वजनिक कर दिया तो ऐसी स्थिति से हम शायद कभी उबर नहीं पाएंगे। साइबर अपराधी कोई सामान्य अपराधी नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से आपकी पहचान मिटाने के अभियान में लगे हैं। ऐसे कृत्यों से निपटने के लिए कड़े कानून बनाने के साथ–साथ जागरूकता से ही निपटा जा सकता है।

(आलेख स्रोत: अखबारों एवं वेबसाइटों पर उपलब्ध विभिन्न सामग्री)

द्वारस्थ बैंकिंग

द्वारस्थ बैंकिंग का अर्थ है आप घर बैठे ही बैंकिंग की सभी सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। इसमें ग्राहक आसानी से बेसिक बैंकिंग सेवा जैसे की चेक ड्रॉप,कलेक्शन और नकदी जमा, आहरण, इत्यादि का लाभ अपने घर से ही उठा सकते हैं। यहां तक कि आप एक नया सावधि जमा भी खुलवा सकते हैं। अब सवाल ये आ रहा होगा कि ये सब होगा कैसे?

द्वारस्थ बैंकिंग की सेवाओं को प्राप्त करने के लिए ग्राहक को फोन या मोबाइल बैंकिंग सुविधा द्वारा एक अनुरोध (Request) देना होता है जो कि बैंक द्वारा प्रदान की जाती है। फिर बैंक आपकी उस अनुरोध को एक्सेस करती है और फिर ग्राहकों के व्यक्तिगत पते पर भेजती है। अब प्रश्न ये आ रहा होगा कि यह जरुरी क्यों है?

यह इसलिए जरुरी है क्योंकि बहुत से लोगों को बैंक तक जाने में दिक्कत आती है, जिसके वजह से उन्हें दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है जैसे कि पेंशनर को जीवन प्रमाण पत्र फार्म भरने के लिए इत्यादि।

लेकिन अब द्वारस्थ बैंकिंग की मदद से, ये कार्य घर बैठे ही हो जाते हैं, वहीं कुछ बैंक तो आपको मोबाइल द्वारा एक अनुरोध करने पर एटीएम आदि भेज देती है जैसे कि केनरा बैंक का एआई1 एप्प है, यहां आप आसान से घर बैठे बहुत सारी सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं।

भूख

रेनी श्रीवास्तव
अधिकारी
बांसफाटक, वाराणसी

यहीं पर नीचे अभी–अभी,
देखा है बहुतों को,
हँसते–ठहाके लगाते ,
पेट भरते हुए।
और देखा है कुछ को,
बचपन बेच कर कमाते हुए।

गौर से देखा,
भूखे तो वही थे।
बाज़ारों, सड़कों पर निकल कर,
दर–दर ठोकरें खा कर,
जो निवाले की क़ीमत समझते हैं,
भूखे वही होते हैं।

सुख चैन को भूल कर,
आँधी तूफ़ान को झेल कर ,
जो सपनों को पूरा करते हैं,
भूखे वही होते हैं।

मारे जाने के पहले आंखों में आंखें डाले,
जो सवाल पूछता है,
कुछ मुट्ठी चावल,
चुराने के नाम पर,
जो मार दिया जाता है,
भूखा वो ही होता है।

साथ ही,
भूखे तो वो भी होते हैं,
जो बस खाते ही रहते हैं,
आदतन, खेल–खेल में।

भूख किसी के लिए खेल है,
इक मज़ा है।
भूख किसी के लिए
अस्तित्व बनाए रखने की
तपस्या है।

बैंकिंग के संदर्भ में पारस्परिक संबंध कौशल का महत्व

ओमप्रकाश एन एस
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

आज बैंकिंग जगत क्रांति के एक बड़े दौर से गुज़र रहा है। जैसे–जैसे आर्थिक विकास का दायरा बढ़ता जा रहा है, अर्थव्यवस्था में बैंकिंग जैसे सेवा उद्योग की भागीदारी बढ़ती जा रही है। आज के समय में केवल एक चीज स्थिर है और वह है परिवर्तन। बाजार के समीकरण बदल रहे हैं और फलस्वरूप ग्राहकों की ज़रूरतें, अपेक्षाएं और प्राथमिकताएं भी बदल रही हैं। महात्मा गांधी जी की यह उक्ति कि ग्राहक राजा है और हमारी संस्था के अस्तित्व में होने का कारण भी वही है, आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। अत: बैंकिंग जैसे सेवा उद्योग में इन बलदती परिस्थितियों के अनुकूल ढालकर ग्राहकों को उनके यथानुकूल सेवा प्रदान करने के लिए बैंक कर्मियों को कई कौशल की आवश्यकता पड़ती हैं जिनमें से एक है पारस्परिक कौशल। पारस्परिक कौशल आज के समय का एक अत्यधिक वांछित कौशल है जिसे बैंकिंग जैसे प्रगतिशील संगठन अपने कार्मिकों में देखना चाहते हैं और यह वर्तमान समय की मांग भी है।

1. पारस्परिक कौशल :

पारस्परिक कौशल मूल रूप से एक सामाजिक कौशल है जो व्यक्ति को सार्थक संबंध विकसित करने में सक्षम बनाता है। उसी प्रकार पारस्परिक व्यावसायिक कौशल उन सभी व्यवहारों को संदर्भित करता है जो व्यक्ति को लोगों के साथ बेहतर रूप से व्यवहार करने में सक्षम बनाता है, चाहे वे आपके उच्च अधिकारी हों, सहकर्मी हों, ग्राहक हों या आपके संपर्क में आने वाले कोई अन्य व्यक्ति।

पारस्परिक कौशल सफल पेशेवर और सामाजिक संबंधों के साथ–साथ कई अन्य प्रतिभाओं के विकास की नींव है। एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने और बातचीत करने के लिए मनुष्यों को पारस्परिक कौशल की आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति या समूह स्तर पर अन्य लोगों के साथ बातचीत करते समय यह कौशल महत्वपूर्ण होता है। बैंकिंग जैसे सेवा उद्योग में हमें विभिन्न लोगों के साथ विभिन्न स्तरों पर व्यवहार करना पड़ता है। लोगों से व्यवहार करना हमारे पेशे का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। अग्रिम पंक्ति में हमें ग्राहकों, सहकर्मियों और कॉर्पोरेट कार्यालय से निपटना होता है। यहां तक कि बैक ऑफिस पर भी हम अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वाह तब तक नहीं कर सकते हैं जब तक कि हमारे पास गुणवत्तात्मक अंतर–व्यक्तिगत कौशल मौजूद न हो। यह इसलिए है क्योंकि प्रत्येक स्तर पर हमें लोगों से निपटना पड़ता है। लोगों के अलग–अलग रंग होते हैं, इसका मतलब यह है कि उनमें विभिन्न गुण, चरित्र, क्षमता, परिपक्वता स्तर और भावनाएं निहित होती हैं जो उन्हें प्रत्येक व्यक्ति से अलग बनाती हैं।

हमारे पास सबसे विविध संस्कृतियां हैं, इसलिए हमें समाज के साथ–साथ व्यावसायिक जीवन में विभिन्न स्तरों पर लोगों से व्यवहार करने के लिए बेहतर कौशल की आवश्यकता है। हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता हमारे पारस्परिक कौशल को विकसित करने पर अवलंबित है। बैंक, लगातार पारस्परिक कौशल से संपन्न कर्मचारियों की तलाश में रहते हैं क्योंकि यह वह कौशल है जिसके बल पर हम कार्यस्थल में सहकर्मियों, ग्राहकों और आगंतुकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की स्थिति में होंगे। यह सबसे महत्वपूर्ण कौशल है जो प्रत्येक बैंक कर्मी को बढ़ाने की भरसक कोशिश करनी होगी।

2. पारस्परिक कौशल का महत्व :

एक अच्छा पारस्परिक कौशल आपको आसानी से और प्रभावी ढंग से एक–दूसरे के साथ जुड़ना आसान बनाता है। हमारा पूरा व्यवसाय इस बात पर निर्भर है कि हम लोगों से व्यवहार किस

प्रकार करते हैं। जितनी आसानी से हम विविध सांस्कृतिक आबादी के समूहों, लिंग, विभिन्न आयु वर्ग व पृष्ठभूमि के लोगों से व्यवहार कर पाते हैं, हमारा कारोबार उतनी ही आसानी से बढ़ेगा और फलस्वरूप लाभ में वृद्धि होने के साथ–साथ हमारे कॉर्पोरेट लक्ष्य भी हासिल होंगे।

3. पारस्परिक कौशल का विकास :

पारस्परिक कौशल में प्राय: निम्न तत्व शामिल हैं –

- सूचना को प्रभावी रूप से और सही तरह से पहुचाँना।
- अन्य लोगों की भावनाओं को सटीक रूप से समझने में सक्षम होना।
- अन्य लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बने रहना।
- संघर्ष को संकल्पों के ज़रिए निपटान करना।
- गपशप से बचना।
- विनम्र बने रहना।

4. सकारात्मक दृष्टिकोण :

अपना कार्यक्षेत्र हो या निजी जीवन, हमें अपने पारस्परिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए, अक्सर खुशमिजाज बने रहने तथा अपने कार्य और जीवन के प्रति उत्साहित बने रहने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, अपने सहकर्मियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए उनमें निहित सकारात्मक विशेषताओं की पहचान कर उस संबंध में सकारात्मक प्रतिक्रिया अभिव्यक्ति कर सकते हैं। जब आपके सहकर्मी आपके किसी भी कार्य के संबंध में आपकी सहायता करते हैं तो उनके प्रति धन्यवाद अदा करना न भूलें और जब वे आपका सहयोग प्राप्त करना चाहते हैं तो आप उनका अवश्य स्वागत करें और इस दिशा में उन्हें आवश्यक समर्थन प्रदान करें। अपनी मुस्कराहट को बरकरार रखते हुए हमें हर समय सकारात्मक बने रहना होगा। जैसी भी स्थिति हो, किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाने से बचना चाहिए और साथ ही किसी को अपनी स्वयं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने नहीं देना है। अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने के लिए अपने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना होगा। दूसरे व्यक्ति को आपके नियंत्रण में रखने के लिए सराहना सबसे शक्तिशाली साधन है। सराहना एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति है जो किसी को सौंपे गये कार्य को संपन्न करने की दिशा में अतिरिक्त प्रयास करने के प्रति प्रेरित करता है। कभी दूसरों के सामने किसी की आलोचना न करें, लेकिन यदि आप सच में सराहना करना चाहते हैं तो हमेशा उस व्यक्ति की सराहना उसके साथी के सम्मुख करें।

5. सक्रियता से सुनना और दूसरों पर ध्यान केन्द्रित करना :

जब अन्य लोग आपसे बात कर रहे हों, तो उन्हें महसूस करवाएं कि आप सक्रिय रूप से उनकी बातों को सुनने में रुचि रखते हैं। उदाहरण के लिए, उस व्यक्ति द्वारा क्या कहा गया है उसको दोहराते हुए आप यह साबित कर सकते हैं कि आप उनकी बातों को सक्रियता से सुन रहे हैं। आपके सहकर्मियों को यह जानकर ख़ुशी होगी कि आप उन्हें सुन रहे हैं और उनकी बातों की तरफ ध्यान दे रहे हैं। ध्यान दिये जाने के हिस्से के रूप में, अन्य लोगों की उपलब्धियों को स्वीकार करें और किसी विपरीत या कठिन परिस्थिति में उनके साथ सहानुभूति बरतें।

हम सभी जानते हैं कि अलग–अलग लोग एक ही संदेश की व्याख्या विभिन्न तरीकों से करते हैं क्योंकि सही तरह से सुनने के अभाव के कारण ऐसा होता है। कभी–कभी हम किसी व्यक्ति के शब्दों या कार्यों की तरफ अपना ध्यान न देकर उसकी हैसियत की तरफ अपना ध्यान देते हैं। जब वक्ता द्वारा उच्च स्तर की भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है तो हमें संदेश को ग्रहण करने के प्रति सावधान रहना होगा, भ्रम के मामले में, उस संदेश की पुनरावृत्ति के ज़रिए हम सही अर्थ ग्रहण कर सकते हैं। वक्ता के कहने के प्रति हमारा ध्यान अभिप्रेरणा से प्रभावित होता है ।

प्रभावी ढंग से सुनने की क्षमता को विकसित करने के लिए निम्न बातों की ओर ध्यान देना होगा:

- बीच में हस्तक्षेप न करके व्यक्ति को अपनी बात बताने दें।
- केवल व्यक्ति के संदेश पर ध्यान केंद्रित रखें।
- केवल व्यक्ति द्वारा कही गयी बात पर उचित महत्व दें।
- व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से बचें।

प्रत्येक व्यक्ति की ओर ध्यान देने की ज़रूरत है, चाहे वह जो कोई भी क्यों न हो। इसीलिए जब आवश्यक हो, बोलने के बजाए,

सुनना ही संप्रेषण की दिशा में बेहतर कला है। जब हम ध्यान से सुनते हैं तो मतभेद के लिए कोई मौका नहीं होता।

6. मतभेद दूर करना :

पारस्परिक कौशल में सुधार लाने के लिए मतभेद से बचना काफी मायने रखता है। हमेशा कार्यस्थल पर हर किसी के लिए एक अनुकूल वातावरण निर्माण करने का प्रयास करें। संगठन में सभी लोगों के साथ समान रूप से व्यवहार करते हुए, अन्य सहकर्मियों के निवेदनों पर ध्यान देने और गपशप से बचने के ज़रिए इसे हासिल किया जा सकता है। मतभेद को दूर करने के ज़रिए भी लोगों को एक साथ जोड़ा जा सकता है। जब आपके सहकर्मियों के बीच मतभेद उत्पन्न होता है, तो उन मतभेदों को दूर करने पर विशेष ध्यान दें। इससे आपको निश्चित तौर पर दूसरों का आदर और सम्मान प्राप्त होगा।

किसी को जानने मात्र से उनसे व्यवहार स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं होता। दूसरों के साथ व्यवहार करते समय गलतफहमी और मतभेद होने की संभावना अधिक रहती है। किसी विशिष्ट स्थिति में दूसरे व्यक्ति द्वारा किया जानेवाला बर्ताव हमेशा उसके अपेक्षित स्वरूप के अनुरूप नहीं होता है। उनके दृष्टिकोण, अपेक्षा और परिस्थिति संबंधी कारकों के कारण अलग-अलग समय में लोगों की अलग-अलग भावनाएं हो सकती हैं। अत: कोई भी हमेशा एक समान व्यवहार नहीं करेगा जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष हो सकता है। न केवल दूसरे व्यक्ति के लिए, बल्कि वही स्थिति स्वयं पर भी लागू होती है। कारण जो भी हो, यदि संघर्ष उत्पन्न होता है, तो उसे जल्द से जल्द हल किया जाना चाहिए।

7. स्पष्ट संवाद व हास्य का प्रयोग :

एक स्पष्ट संप्रेषण के ज़रिए आप गलतफहमी से बच सकते हैं। इसलिए, ध्यान दें कि आप क्या कहते हैं और साथ ही आप इसे कैसे कहते हैं। संदेश को प्रभावी रूप से प्रसारित करने के अलावा, संप्रेषण से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि आपकी उम्र पर लिहाज़ किये बिना आप कितना बुद्धिमान और परिपक्व हैं। इसके अतिरिक्त, समय-समय पर थोड़ी सी मात्रा में विनोद या हास्य का प्रयोग करें। लोग ऐसे व्यक्ति को पसंद करते हैं जो उन्हें हंसाते हैं और माहौल को हल्का बनाए रखते हैं। हास्य का प्रयोग करने से आपको अच्छे पारस्परिक कौशल विकसित करने और लोगों के स्नेह को हासिल करने में मदद मिलेगी। मनुष्यों को मानवीय स्पर्श की ज़रूरत है। हास्य न केवल लोगों को करीब लाने के लिए अनुकूल होता है बल्कि हमारे शरीर में विभिन्न रसायनों की रिहाई के कारण आंतरिक रूप से भी स्वस्थ बनाता है। कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में भी यह सहायक सिद्ध होता है।

8. दूसरों को समझना व शिकायत करने से बचना :

दूसरों के कार्य के मामले में क्या चल रहा है, इसके प्रति संवेदना रखना महत्वपूर्ण होता है। ऐसा करने के लिए आपको अपनी भावनाओं को नियोजित करने और अपने सहकर्मी की जगह खुद को रखकर इस बात को समझने की कोशिश करनी होगी। इसके अतिरिक्त, अपनी निराशाओं को मौखिक रूप से कहने से बचें अन्यथा लोगों को एक साथ जोड़ने के बजाय संगठन में इससे संघर्ष बढ़ता है। हमारी संस्कृति में यह बात प्रचलित है कि किसी भी परिणाम को हमें भगवान का ऐसा करने के पीछे कोई कारण है समझकर उसे स्वीकारना होता है। इसके अलावा, हमें सलाह दी जाती है कि अप्रत्याशित परिणाम/व्यवहार के प्रति भी शांत बने रहना है। ऐसा समय भी आता है जब स्थिति हमारे पक्ष में नहीं होती और किसी के व्यवहार, शैली या आचरण से हम खुश नहीं होते। उस समय हमें इसे स्वीकारते हुए शिकायत करने से बचना होगा। हमें दूसरे व्यक्ति की जगह स्वयं को रखकर उसके दृष्टिकोण को समझना होगा।

निष्कर्ष :

यह कहा जा सकता है कि बैंक जैसे सेवा संगठन में पारस्परिक कौशल सफलता का एक प्रमुख संकेतक है। इसे सबसे अधिक महत्व रखने वाले सॉफ्ट स्किल्स में से एक माना जा सकता है। अत: यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि पारस्परिक कौशल जीवन में सफलता की नींव है। मजबूत पारस्परिक संबंध कायम करने में सफल व्यक्ति औपचारिक और अनौपचारिक रूप से टीमों या समूहों सहित अन्य लोगों के साथ बेहतर रूप से कार्य करने में सक्षम होते हैं। वे दूसरों के साथ प्रभावी रूप से संवाद कर पाते हैं चाहे वह परिवार हो, मित्र हो, ग्राहक हो, या सहकर्मी।

पराया धन

सोनिया सेन
लिपिक
अंचल कार्यालय, जयपुर

जब–जब भी मैं रोती थी, बाबा डर जाते थे।
दौड़ कर आते थे, मुझ पर बड़ा चिल्लाते थे।
उठ न पगली, किसी दिन ज़ोर से गिर जाएगी।
खुद भी रोएगी और मुझे भी रुलाएगी।

और मैं दौड़ कर जाती थी, उनसे जाके लिपट जाती थी।
उनके कंधे पर आँसू पोंछकर, धीरे से मुस्काती थी।
आज सिर पकड़ कर बेठे है बाबा, कंधे से नहीं लगते हैं।
मेरे शव के सामने मेरे बाबा, फफक–फफक कर रो पड़ते है।

कितनी बार कहा था मैंने, पैसे नहीं पुलिस ले कर आओ बाबा,
जिसे पराया किया है ब्याह के, उस धन को ले जाओ बाबा।
बेबस बाबा जात–पात के बोझ तले, मुझसे यही कह जाते थे।
सब्र कर बेटी, सब सही हो जाएगा, पीठ दिखाकर आँसू मुझसे छिपा जाते थे।

छाती पीट–पीट कर रोती माँ, ढांडस मुझे बँधाती थी।
थोड़ा सह ले बेटी, घर है वो तेरा, कहकर फोन रख देती थी।
जिस बाबा ने राजकुमारी की तरह मुझे पाला था।
उसी परी का शरीर, मार–मार कर नीला ज़ालिमों ने कर डाला था।

सोने से लादकर भेजा था बाबा ने, जमीन तक गिरवी कर दी थी।
उसी रूपवन्ती बेटी की देह, जलाकर कोयले जेसी काली कर दी थी।
ऐसा जलाया है बाबा मुझे, चिता की भी नहीं जरूरत पड़ी।
क्यूँ नहीं बताया किसी ने, बेटी पैदा होते ही पराया धन ही रही।

पराया धन ही रही.....

पन्ना और मैहर धाम

अमित कुमार
अधिकारी
सी.पी.एच., पटना

कहते है कि माँ के दूध का कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता है। परंतु कम से कम मां के सपनों को पूरा करके हमलोग उनके दामन को खुशियों से भर सकते हैं। जैसा कि मां के सपने (भाग –1) में मां द्वारा यात्रा किए गए सभी स्थानों का वर्णन था। उन स्थानों में प्रमुख :– रामेश्वरम, कन्याकुमारी, तिरुपति बालाजी, जगन्नाथ पुरी, साई बाबा (शिर्डी), शनि शिंगणापुर, नाशिक, मीनाक्षी मंदिर (मदुरै), विट्ठल मंदिर (पंढरपुर), तुलजा भवानी मंदिर (तुलजापुर), चामुंडी देवी (मैसूर) इत्यादि का वर्णन है। अब उसी की अगली कड़ी अर्थात भाग –2 में हमलोग पन्ना धाम और मैहर धाम की चर्चा करेंगे। चूंकि मां एक प्रणामी (श्री कृष्ण भक्त / अनुयायी) है तो वो मुझे करीब 2 साल से पन्ना धाम (प्रणामी का प्रमुख स्थान) जाने के लिए अनुरोध करते रहती थी। मैंने भी उनसे वादा किया था कि जैसे ही मेरा ट्रांसफर पटना, बिहार हो जाएगा तो मैं जरूर आपका यह सपना भी पूरा करूंगा। आखिर वो दिन आ ही गया और जनवरी 2021 के अंत में मुझे छुट्टी मिल गई और मैंने भी मौका को भुनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और तुरंत पन्ना और मैहर धाम के लिए आने – जाने का 3 टियर एसी ट्रेन टिकट बुक कर लिया। सबसे पहले हमलोग 27.01.2021 को रात में पटना से सतना स्टेशन के लिए निकल पड़े और अगली सुबह हमलोग सतना स्टेशन (मध्यप्रदेश) पहुंच गए। फिर वहां से हमलोग एक लोकल टैक्सी करके सबसे पहले पन्ना धाम जो कि वहां से लगभग 75 km दूरी पर थी के लिए निकल पड़े और 2 घंटे में पन्ना पहुंच गए।

* **पन्ना :–** पन्ना, मध्यप्रदेश में स्थित एक प्रमुख नगर है। यह एक ऐतिहासिक और बहुत पुराना नगर है। नागवंश की कुलदेवी पद्मावती किलकिला नदी के किनारे विराजित है, जिसके कारण इसका नाम पद्मा और बाद में पर्णा और फिर पन्ना हुआ। 1675 ई. में बुंदेलखंड के शासक राजा छत्रसाल द्वारा उनके आध्यात्मिक गुरु स्वामी प्राणनाथ (प्रानामी संप्रदाय के राजगुरु) के आदेश पर राजधानी बनाए जाने के कारण इस शहर का महत्त्व और बढ़ गया। यहां स्थित ऐतिहासिक महत्त्व के भवनों में संगमरमर के गुंबद वाला स्वामी प्राणनाथ मंदिर (1756) और श्री बलदेव जी मंदिर (1795) शामिल है। यहां बुंदेलखंड के प्रसिद्ध श्री युगलकिशोर जी मंदिर में भगवान् श्रीकृष्ण का अष्ट सिद्ध शालिग्राम विग्रह है। त्रेता युग में भगवान् श्रीराम चित्रकूट पर्वत (पन्ना के निकट) होते हुए पन्ना में भी कुछ समय व्यतीत किए थे। पन्ना स्थित श्री प्राणनाथ मंदिर प्रणामी संप्रदाय (श्री कृष्ण भक्त/अनुयायी) के लोगों का प्रमुख केंद्र है। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण की बाल्या अवस्था लगभग 11 वर्ष तक पन्ना में ही बीता था और यहीं पर उन्होंने गोपियों संग रासलीला भी रचा था इसलिए यह शहर प्रणामी संप्रदाय (श्री कृष्ण भक्त/अनुयायी) का प्रमुख तीर्थ स्थान माना जाता है। चूंकि मेरी मां भी एक प्रणामी (श्री कृष्ण भक्त/अनुयायी) है तो उनका भी सपना था कि एक बार पन्ना धाम अवश्य पधारें। माँ का मानना है कि यहां आने से प्रणामी लोगों को मोक्ष कि प्राप्ति होती है, इसलिए मैंने उनका यह सपना जरूर पूरा करवाया। क्योंकि ऐसा माना जाता है स्वामी प्राणनाथ जी प्रणामी संप्रदाय के राजगुरु करीब 108 वर्षो तक भगवान श्रीकृष्ण की उपासना की थी और पन्ना धाम में ही समाधि ले ली थी। इसलिए यह पन्ना धाम, प्रणामी संप्रदाय (श्री कृष्ण भक्त/अनुयायी) के लिए प्रमुख तीर्थ स्थल माना जाता है। अन्य लोग भी यहां आकर सभी मंदिरों का दर्शन कर सकते हैं। यहां के स्वामी प्राणनाथ मंदिर, श्री बलदेव जी मंदिर और श्री युगल किशोर जी मंदिर की सुंदरता अतुलनीय है। ऐसा माना जाता है कि पांडवों ने अपना अधिकांश समय पन्ना में ही बिताया था जिसका उल्लेख महाभारत में भी मिलता है।

✻ अन्य आकर्षण :–

i) **हीरे का खान :–** पन्ना में हीरे की महत्वपूर्ण खाने हैं जिनमें 17 वी. शताब्दी से खुदाई हो रही है। यह भारत में हीरा उत्पादन करने वाला एकमात्र खदान क्षेत्र है।

ii) **पन्ना राष्ट्रीय उद्यान :–** पन्ना में एक बाघ आरक्षित क्षेत्र है जिसे पन्ना राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता है। पन्ना को 2007 में भारत के पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारत के सर्वश्रेष्ठ रखरखाव वाले राष्ट्रीय उद्यान के रूप में उत्कृष्टता का पुरस्कार दिया गया था। केन नदी इस राष्ट्रीय उद्यान का मुख्य आकर्षण है। इस उद्यान में सफेद बाघ भी पाए जाते हैं। अभी बाघों की कुल संख्या 11 है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को 1994/95 में भारत टाइगर रिजर्व में से एक घोषित किया गया है और प्रोजेक्ट टाइगर के संरक्षण में रखा गया है।

पन्ना के प्रमुख दर्शनीय स्थान :–

1. स्वामी प्राणनाथ मंदिर, 2. श्री बलदेव जी मंदिर, 3. श्री युगल किशोर मंदिर, 4. पद्मावती मंदिर, 5. खेजडा मंदिर, 6. चौपड़ा मंदिर, 7. बैजूजी रानी मंदिर, 8. राम जानकी मंदिर, 9.स्वामी देवेन्द्र नाथ मंदिर, 10. पांडव झरना और गुफा, 11. चित्रकूट पर्वत, 12. पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, 13. कीलकिला नदी और गुफा, 14. अजयगढ़ किला, 15. केन घड़ियाल सेंचरी, 16. गायत्री मंदिर, 17. हीरे की खान, इत्यादि!

✻ पन्ना के निकटतम स्थान / रेलवे स्टेशन :–

1) चित्रकूट पर्वत (105 km)

2) सतना स्टेशन (75 km)

3) मैहर स्टेशन (95 km)

4) खजुराहो स्टेशन (45 km)

✻ वायु मार्ग :– पन्ना से निकटतम हवाई अड्डा 45 कि.मी. की दूरी पर खजुराहो हवाई अड्डा है।

पन्ना के सभी दर्शनीय स्थलों को हमलोग एक लोकल टैक्सी करके 2 दिन के अंदर ही बहुत अच्छी तरह से घूम लिए थे। यहां के मंदिरों में मुफ़्त में खाने और रहने की भी व्यवस्था है। इस तरह से हमलोग पन्ना धाम के सभी दर्शनीय स्थलों को घूम कर अपने अगले पड़ाव यानी कि मैहर धाम के लिए अगली सुबह पन्ना से ही एक लोकल टैक्सी को

बुक करके मैहर के लिए निकल पड़े जो कि पन्ना से लगभग 100 कि.मी. की दूरी पर था। करीब 11 बजे हमलोग मैहर पहुंच गए। चूंकि मां को चलने–फिरने में असमर्थता थी तो हमलोग माताजी (मां शारदा) के दर्शन के लिए रोपवे (लिफ्ट) और व्हील चेयर का सहारा लिए।

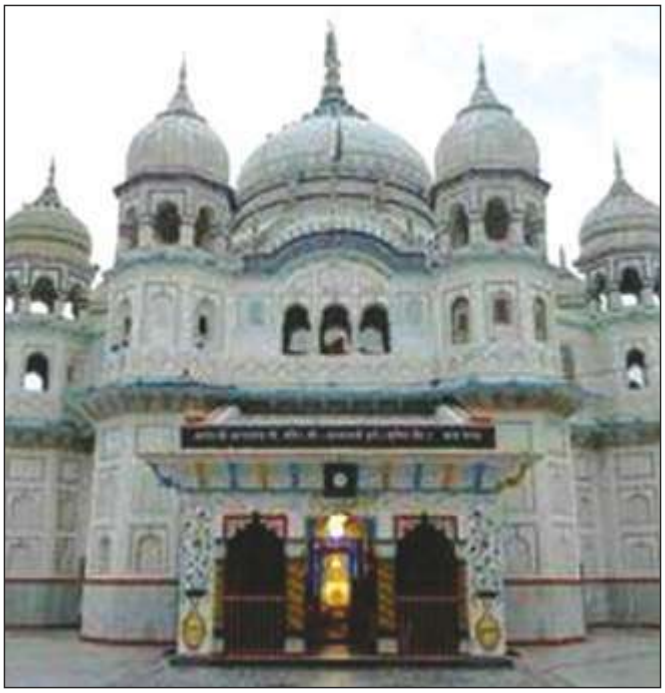

✻ मैहर :– मैहर, मध्यप्रदेश में स्थित एक प्रस्तावित जिला है। यह एक प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ स्थान है। यह अभी सतना जिले में है और सतना से करीब 40 कि.मी. की दूरी पर है। मैहर में मां शारदा का प्रसिद्ध मंदिर है जो नैसर्गिक रूप से समृद्ध कैमूर तथा विंध्य की पर्वत श्रेणियों की गोद में अठखेलियां करती तमसा के तट पर त्रिकूट पर्वत की पर्वत मालाओं के मध्य 600 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह ऐतिहासिक मंदिर 108 शक्ति पीठों में से एक है। यह पीठ सतयुग के प्रमुख अवतार नरसिंह भगवान के नाम पर नरसिंह पीठ के नाम से भी विख्यात है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर आल्हखंड के नायक आल्हा व उदल दोनों भाई, मां शारदा के अनन्य भक्त थे। पर्वत की तलहटी में आल्हा का तालाब व अखाड़ा आज भी विद्मान है। देवी शारदा का यह प्रसिद्ध शक्ति पीठ स्थल देश के लाखों लोगों के आस्था का केंद्र है। माता का यह मंदिर धार्मिक एवं ऐतिहासिक है। यहां प्रतिदिन हजारों दर्शनार्थी आते हैं किन्तु वर्ष में दोनों नवरात्रों में यहां मेला लगता है जिसमें लाखों यात्री मैहर आते हैं। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान शिव देवी मां सती के मृत शरीर को ले जा रहे थे,

तो माता का हार इस जगह पर गिर गया था, इसलिए इस जगह का नाम मैहर (माई का हार) पड़ गया। मैहर में त्रिकूट पर्वत की ऊंची पहाड़ियों के ऊपर शारदा देवी का मंदिर है जो कि शहर के मध्य से लगभग 5 कि.मी. ऊपर है। वहां शारदा देवी की एक पत्थर की मूर्ति है तथा मंदिर के पास ही माता का पैर और भगवान नरसिंह की मूर्ति प्राचीन शिलालेख है।

सबसे पहले हमलोग मैहर धाम पहुंच कर मां शारदा को चढ़ाने के लिए प्रसाद और चुनरी खरीदी। मां शारदा मंदिर तक जाने का दो रास्ता है :– 1) सीढ़ी द्वारा, 2) रोपवे (लिफ्ट) द्वारा। अगर आप सीढ़ी द्वारा जाते हैं तो करीब 1008 सीढ़ियां आपको चढ़नी पड़ेगी और इसमें आपको करीब 1–2 घंटे का समय लगेगा और यदि आप रोपवे (लिफ्ट) से जाना चाहते है तो सबसे पहले तो इसके लिए आपको 130/– का प्रति व्यक्ति टिकट कटाना होगा, इससे आप मात्र 10 मिनट में ही मंदिर तक पहुंच जाएंगे। जो लोग चलने–फिरने में असमर्थ है या बुजुर्ग लोगों के लिए रोपवे (लिफ्ट) का इस्तेमाल सर्वोत्तम है। रोपवे से जाने पर, पहाड़ियों और मैहर धाम का अदभुत नजारा देखने को मिलता है। चूंकि मां को गठिया कि बीमारी है और वो चलने में असमर्थ थी तो हमलोग रोपवे के सहारे मंदिर तक गए और फिर व्हील चेयर लेकर मां को मां शारदा के दर्शन करवाए। यहां

पर भी मंदिर के ट्रस्ट के द्वारा मात्र 15/– रुपए में भरपेट खाने की व्यवस्था है। मैहर में और कुछ ज्यादा घूमने के लिए नहीं है इसलिए हमलोग उसी टैक्सी से मैहर से सतना के लिए निकल पड़े क्योंकि उसी दिन शाम में हमलोग की सतना से पटना के लिए ट्रेन थी। अगले दिन सुबह ही हमलोग अपने घर पटना वापस आ गए। इस तरह मैंने अपनी मां को किए वादे को पूरा किया तथा उनके सपनों को सच कर दिखाया। उनके सपनों को पूरा करना ही मेरा सपना है और मेरा फर्ज़ भी। मां बहुत खुश हुई और दोनों जगहों की ढेर सारी यादों को संजो कर ले आयी।

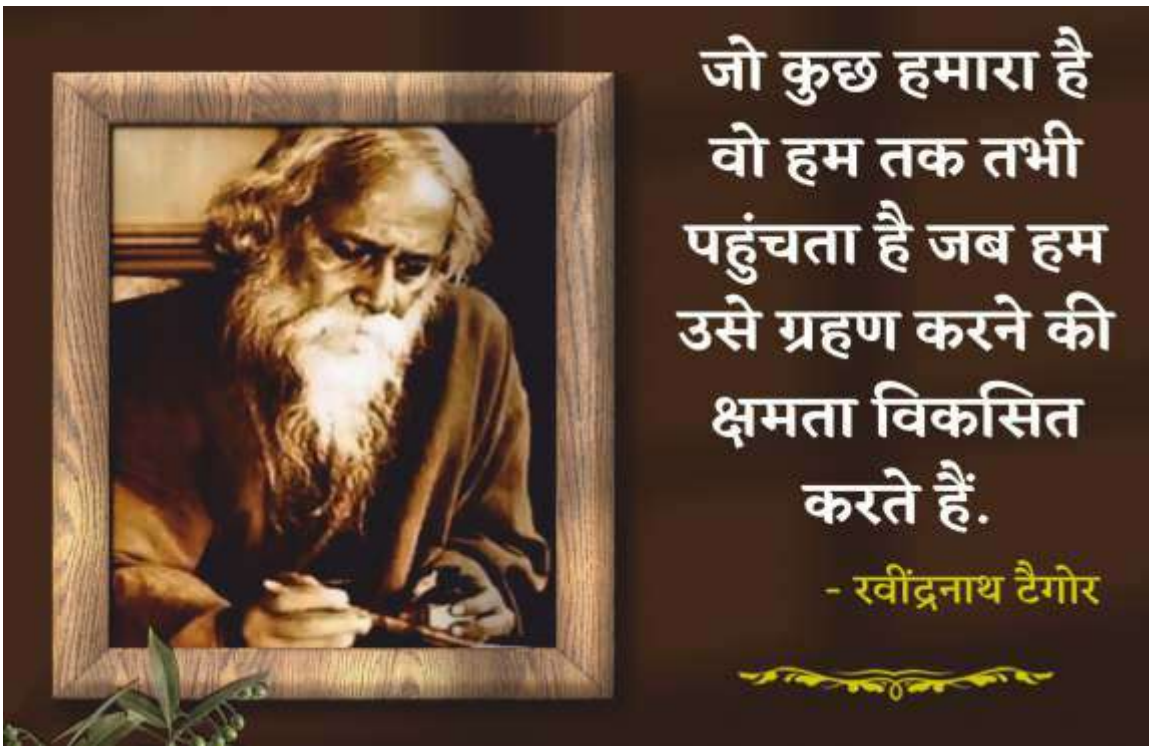

मच्छर साथ दो-दो हाथ

आदर्श शर्मा
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

सुबह का समय था। पिताजी रोज़ की तरह अखबार के पन्ने पलटते हुए साथ में चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। स्कूल की छुट्टी होने की वजह से हम भी महाराजा स्टाइल में बिस्तर पर आराम फर्मा रहे थे। स्कूल जाने के लिए रोज़ सुबह जल्दी उठना बड़ा ही खराब अनुभव रहा है। सोचा करते थे जब बड़े हो जाएंगे तब आराम से अपने हिसाब से उठा करेंगे। घड़ी को दीवार से ही हटा देंगे। हालांकि वह सपना ही रह गया। जब बड़े हुए तब समझ आया कि घड़ी ही सब कुछ है। अपनी सुइयों के इशारे पर दुनिया को नचाने वाली घड़ी। समय बदलते हुए बड़े-बड़े फेरबदल और उलटफेर कर देने वाली घड़ी। खैर, हम अपने किस्से पर वापस आते हैं। तो हुआ यूं,

कि ज़ोरदार बारिश के चलते बिजली हो गयी गुल और पंखा हुआ बंद। तभी एक मच्छर भिनभिनाता हुआ अपनी सुरीली आवाज़ में हमारे कान के पास अपने सुर ताल छेड़ने लगा। महाशय को भगाया, किन्तु अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का जुनून था उस मच्छर में। परेशान होकर हम ने ठान लिया था कि इसको सबक सिखाना है, तभी महाशय जाकर धीरे से हमारे बनियान पहने पिताजी के कंधे पर विराजमान हो गए। अब हमारी आँखों में खून सवार था। हाथ का पंजा पूरी तरह से पीछे खींच कर हमने मच्छर पर जोरदार प्रहार किया। किन्तु हम यह भूल गए कि यह बैठा कहाँ है! आऽऽऽ कर के पिताजी थोड़ा कराहे। हमारा पंजा गुलाबी रंग में पूरी तरह छप चुका था पिताजी के कंधे पर और बीच पंजे पर सुशोभित थे महाशय मच्छर। अंततः महाशय परलोक सिधार चुके थे। हम अपने मंसूबे में कामयाब होने से खुश थे किन्तु वह खुशी कुछ देर ही रही क्योंकि चंद पलों बाद पिताजी का पंजा हमारे गाल पर छपा हुआ देखा जा सकता था।

काल की परिभाषा

अंकुश शर्मा
लिपिक
अम्ब, हिमाचल प्रदेश

आज खिली मधुबन की देखो सारी कलियां,
महक रही पुष्पों की खुशबू से सब गलियां,
आज बली ऋतुराज तो कल आएगी पतझड़,
सूख चुके होंगे सब पल्लव सारी कलियां।

मानव संपत्ति धन दौलत पर इतराता,
स्वयं बघारे शेखी और फिरे इठलाता,
ये सब तो है आनी जानी माया 'अंकुश',
दृढ़ निश्चय उद्यमी नहीं मगर घबराता।

कल तक जो कहलाते थे खुद को महाराजा,
चला समय का चप्पू उनका बज गया बाजा,
आज सिंहासन पर विराज जो प्रजा चलाते,
यही प्रजा उनको कल ढांकेगी दरवाजा।

मृगनयनी बाला सुन उजले अंगों वाली,
आज सभी दीवाने तेरे ओ मतवाली,
पर कल काया ढीली, झुरियां छाई होंगी,
कहीं लुप्त हो जायेगी चेहरे की लाली।

किसके वचन मधुर, थी किसकी कर्कश भाषा,
किसने किया हतोत्साहित, किसने दी आशा,
किसने साथ दिया, किसने थी खोंपी बरछी,
काल लिखेगा सब की उचित–उचित परिभाषा।

कौन बना राधेय बना था कौन विभीषण,
काल सभी का न्याय तुला पर करे परीक्षण,
पुण्य किसी ने किया कभी, या किया पाप हो,
काल बही ने लिया चढ़ाए कर्म उसी क्षण!

नित्य चलायमान युगों से घड़ी रही है,
समय स्वयं नारायण ये भी वचन सही है,
करो सदा सम्मान समय का सेवक साधो!
बांध सका ना रावण जिसको काल वही है।

बीज की शक्ति

अस्मिता द्विवेदी
खुदरा आस्ति केन्द्र
जबलपुर

मिट्टी ने पूछा बीज से, जीवन कहां से लाते हो
निर्जीव पड़े रहते हो वर्षों, सजीव कैसे बन जाते हो।।

हवा उड़ा ले जाती तुमको, नदियों में बह जाते हो
कभी बैठ कर पंछी के पंख पर, दूर देश हो आते हो।।

न कुछ कहते, न कुछ सुनते, न स्वयं ही चल पाते हो
आज छोटे से दिखने वाले, कल विशाल वृक्ष बन जाते हो।।

सोए रहते सदियों तक, हर मौसम को सह जाते हो
जीवन छुपाकर रखते अंदर, धीरज कैसे धर पाते हो।।

अंकुर को जन्म देने के लिए, स्वयं मिट्टी में मिल जाते हो
वृक्ष को याद रखती है दुनिया, तुम भुला दिए जाते हो।।

सृजन करने वाले तुम हो, पर तुम्हारा गुणगान नहीं होता
तुमसे निकले पौधे जितना तुम्हारा सम्मान नहीं होता।।

सुनकर मिट्टी की बातें, बीज अब मुस्काया
रहस्य छुपा जो उसके भीतर, मिट्टी को बतलाया।।

सूखी धरा पर जब बारिश का पानी पड़ता है
रोम-रोम में मेरे, जीवन अंगड़ाई भरता है।।

निर्मल पवन के झोंके, जब सृष्टि से प्रेम जताते हैं
सृजन करने वाले गुण, मुझमें स्वयं ही आ जाते हैं।।

कण-कण में मेरे सदा जीवन व्याप्त रहता है
सृजन करने से पहले प्रति क्षण प्रतीक्षा करता है।।

पहचान खो देने का कभी विलाप नहीं करता
अपनी सृजन शक्ति पर अभिमान नहीं करता।।

मिट्टी में दबकर भी मैं, सदा मुस्काता हूँ
स्वयं टूट कर टुकड़ों में, जीवन रच कर जाता हूँ।।

बीज हूँ मैं, हर एक पौधे में नज़र आता हूँ
स्वयं विलीन होकर, हजार वृक्ष दे जाता हूँ।।

मेरी अनुगुल की मनोरम यात्रा

सौम्या सुचरिता
लिपिक
वज्रकबाटी, कटक

बच्चों के स्कूल में अवकाश होने के उपरांत बच्चों ने नाना– नानी के घर घूमने के लिए अनुरोध किया और हम भी उनको मना नहीं कर पाएँ और यात्रा अवकाश रियायत लेकर अपने गाँव जो कि भारत के पूर्व में स्थित उड़ीसा राज्य के अनुगुल जिला जाने का कार्यक्रम बनाया। अनुगुल पहुँचने के लिए आप उड़ीसा के किसी भी प्रमुख शहरों से सड़क या रेल यातायात माध्यम का उपयोग कर सकते हैं। हम इस बार उड़ीसा की राजधानी और मंदिरों के शहर भुवनेश्वर से रेल द्वारा लगभग 160 कि.मी. की लम्बी यात्रा के उपरांत अनुगुल पहुँचे। वहाँ से किराये की एक गाड़ी से अपने घर चल पड़े। घर पर नास्ता कर के सबसे पहले हमने अनुगुल की अधिष्ठात्री देवी माँ बूढ़ी ठाकुरानी की मंदिर घूमने चले। माँ की मंदिर सुनासगढ़ पहाड़ के ऊपर एक कोने में अनुगुल के बीचोबीच स्थित है। यहाँ के लोककथा के अनुसार, प्राचीन काल में इस जगह पर सुना नामक एक कंध संप्रदाय के राजा शासन करते थे। उन्होंने इन पहाड़ियों को गढ़ के रूप में इस्तेमाल किया करते थे। उनके नाम के अनुसार इस पहाड़ को सुनासगढ़ नाम से नामित किया गया है। यहाँ पर उन्होंने माँ की मूर्ति को स्थापित करते हुए इष्ट देवी के रूप में पूजा अर्चना किए, तभी से अनुगुल जिला और उसके आस–पास के क्षेत्र की अधिपति के रूप में माता की पूजा की जा रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमलोगों ने सर्वप्रथम माँ की अर्चना पूजा की। कृष्ण पक्ष, भाद्र माह, द्वितीया तिथि में माँ का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इस दौरान भी हमलोग सपरिवार यहाँ घूमने आते हैं। इस दिन यहाँ यात्रा का आयोजन होता है। इसके अलावा दशहरा पूजा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सुंदर प्रकृति और वातावरण लोगों को आकर्षित करती हैं और इस कारण हजारों की संख्या में लोग आते हैं। इसके अलावा, भगवान गणेश, राधा–कृष्ण, शनि देव, श्रीराम लक्ष्मण सीता, भगवान शिव, माता पार्वती और नवग्रह की हमलोगों ने पूजा अर्चना किया।

सुनासगढ़ पहाड़ी की चोटी पर जगन्नाथ मंदिर स्थित है। इस भव्य मंदिर की नींव 21.02.1996 को पुरी के विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ की तरह बनाने के लिए दी गई थी। जिला प्रशासन ने मंदिर के लिए एक ट्रस्ट का गठन किया और दिनांक 22.02.2002 को प्राण प्रतिष्ठा उत्सव होने के बाद मंदिर को सभी आम जन के लिए खोल दिया। यह क्षण अनुगुल वासियों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था। अब इस स्थान को शैलश्री के नाम से जाना जाता है। मुख्य मंदिर में मुखशाला, जगमोहन, नाट्यमंदिर और एक गर्भगृह है। मंदिर में भगवान बलभद्र, भगवान जगन्नाथ और देवी सुभद्रा की पूजा हम सभी ने पूरे मन से किया। इस परिसर में अवस्थित देवी लक्ष्मी, बिमुला, सरस्वती की भी पूजा हमलोगों ने की। कोणार्क की तरह यह एक सूर्य मंदिर भी है जहाँ सूर्य देवता की पूजा की जाती है और हमलोगों ने सूर्य देवता की भी पूजा की। श्री जगन्नाथ महाप्रभु को देखकर बच्चे बहुत खुश हुए और आनंद से मंदिर कि परिक्रमा करने लगे। जगन्नाथ महाप्रभु के साल भर में कई त्योहार है जो शैलश्री क्षेत्र में मनाया जाता है, उनमें से कुछ हैं बलराम जन्म, चंदन यात्रा, स्नान यात्रा, नेत्रोत्सव, रथ यात्रा, बाहुडा यात्रा, श्री हरि सयन एकादशी, चितालागी अमावस्या, जन्माष्टमी, दोल यात्रा, अक्षय तृतीया, पणा संक्राति आदि ऐसा लगता है जैसे साल भर त्योहार उत्सव के रूप में यह स्थान सजा हुआ रहता है। यह मंदिर परिसर साल भर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ रहता है। प्रतिदिन मंदिर में छह बार प्रभु को प्रसाद अर्पित किया जाता है। जिसमें से कोठो भोग या अभड़ा भगवान जगन्नाथ और अब देवताओं का सबसे प्रतीक्षित प्रसाद है जो दोपहर को अर्पित किया जाता है। देवताओं को भोग लगाने के बाद आनंद बाजार में भक्तों के बीच महाप्रसाद का वितरण किया जाता है। आज हम सभी ने पेट भर महाप्रसाद का सेवन किया और कुछ सूखा भोग जो खाजा भगवान जगन्नाथ का प्रिय भोग लिया होता है और शाम की आरती देखकर घर वापस आ गए।

दूसरे दिन सवेरे हम निकल पड़े अनुगुल स्थित कुछ नये और मनोरम जगह की खोज में। अनुगुल – बागेड़िया मार्ग पर 28 किलोमीटर की दूरी पर कोशला नामक एक गाँव स्थित है। यह गाँव देवी रामचंडी को समर्पित अपने मंदिर के लिए जाना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार यह स्थान जंगल से परिपूर्ण था। यहाँ की लोककथा के अनुसार, गाँव के चरवाहों ने देखा कि एक काली बछड़ी हर दिन छोटे से गड्ढे में दूध देती थी। गाँव के लोगों ने मुखिया को इस संबंध में सूचित किया और इसका वर्णन किया। तब कुछ गंड समुदाय के लोगों ने वहाँ पर पूजा अर्चन शुरू किया। कुछ दिन बाद उनको स्वप्न आया की यहाँ पर शिवलिंग है। उसके कुछ दिन बाद इसी जगह पर एक बूढ़ी माँ घूम रही थी। जब स्थानीय लोग उनको देखने निकले तो वह दिखी नहीं तब से वह रामचंडी के रूप में पूजा की जाती है। कहा जाता है कि माँ रामचंडी की पूजा करके श्रीराम जी रावण से जीत गए। यहाँ पर देवी रामचंडी की पूजा–अर्चना ऊपर और भगवान शिवजी की पूजा नीचे की जाती है और हमने भी उनका पूजा किया। कहा जाता है कि जो भी मन से पूजा करते हैं उसे शिवजी वर प्रदान करते हैं। माना जाता है कि देवी रामचंडी की पूजा करने से बाँझ महिलाओं को संतान की प्राप्ति होती है। कृष्ण पक्ष भाद्र के दूसरे दिन यहाँ एक यात्रा आयोजित की जाती है। पहले यहाँ से यात्रा की शुरूआत होती है उसके बाद सम्पूर्ण उड़ीसा के देवी पीठों में शारदीय यात्रा शुरु होती है। मंदिर में प्रसाद सेवन करने और बच्चों की जिद्द के कारण पास में एक छोटा सा लेकिन सुंदर उद्यान अनुगुल नगर–पालिका द्वारा बनाया गया है, वहाँ घूमने चले गए। बच्चे खुशी से झूला झूले और खेलने लगे। थोड़ी देर उद्यान में टेहलने के बाद हमलोग एक और अनोखा और मनोरम जगह घूमने के लिए निकल गए।

जिला मुख्यालय शहर अनुगुल से 17 किलोमीटर दूर गढसंत्री, पीठासीन देवता लोभी का गाँव है। देवी अपने भक्तों को लंबी उम्र और समृद्धि का आशीर्वाद देती है। देवी अपने अजीबोगरीब नाम लोभी के कारण हिंदू आस्था और विश्वास की अन्य देवी– देवताओं से अलग है, जो लालच को दर्शाता है। इस गाँव के लोगों का कहना है कि यह लालच सकारात्मक है, यह भक्ति, प्रसाद, और अहँकार त्याग के लालच से जुड़ा है। वहाँ पहुँचते–पहुँचते हमें शाम हो गई जिसके कारण हमें सायं काल की पूजा में शामिल होने का सौभाग्य मिला। आरती समाप्त होने के बाद हम मंदिर बेढ़ा में बैठें कुछ बुजुर्ग लोगों से बातें करके मंदिर के बारे में कुछ तथ्य प्राप्त किया। किंवदंती है कि, देवी की पूजा मूल रूप से राक्षसों के राजा रावण ने किया था। राम द्वारा रावण का वध होने के बाद देवी ने भगवान श्री राम का अयोध्या तक पीछा किया और रास्ते में वह गढसंत्री में बस गई। मंदिर

छोटा सा है, लेकिन सुंदर है। इसे देवी शक्ति की विभिन्न अभिव्यक्तियों के चित्रों और मूर्तिकारों से सजाया गया है। माँ लोभी की औपचारिक यात्रा हर साल कार्तिक पूर्णिमा के दिन निकाली जाती है। त्योहार के दौरान मुख्य भेंट बालों का मुंडन है। इस त्योहार को लोभी ठाकुरानी यात्रा के नाम से जाना जाता है। इस उत्सव को दोनो गाँवों, गढसंत्री और तुलसीपाल मिलकर आयोजित करते हैं। पूरे राज्य से हजारों लोग पूजा करने के लिए एकत्र होते हैं। इस बार हम सोच रहे हैं सपरिवार इस यात्रा में योगदान देंगे। इस दिन माँ के प्रतीक को आलम घर जो की तुलसीपाल गाँव में स्थित है औपचारिक जुलूस के साथ गढसंत्री के पिढ शाही दैनिक भेट घर लाया जाता है। पाइकों के लोकनृत्य के अलावा बड़े पैमाने पर विशाल नक्षाड़ा, मृदंग, घंटे के साथ विशाल शोभा यात्रा लिये देहुरी देवी की प्रतीक को अपने कंधे पर लिए हुए पाँच किलोमीटर जुलूस के बीच चलता है। जब वह मंदिर में पहुँचता है, पहले से ही बड़ी संख्या में भीड़ होती है। बहुत सारे अस्थायी स्टॉलों जैसे गुब्बारे, खिलौने, विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ, पकवानों कि दुकान होती है, पूजा सामग्री की दुकानें होती है जिसे आस–पड़ोस के लोग कुछ कमा लेते हैं। पवित्र प्रतीक को एक अस्थायी मंडप पर रख कर चार दिनों तक पूजा अर्चना किया जाता है। दर्शन के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रसाद लिये पंक्ति में खड़े रहते हैं और कुछ माँ के आशीर्वाद पाने के लिए अपने बच्चों का मुंडन कराते हैं। यात्रा की अंतिम दिन देवता का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व अपने मूल निवास स्थान पर लौट आता है।

लोभी ठाकुरानी के बारे में सुनते–सुनते कब शाम के आठ बज गये मालूम नहीं पड़ा। बुजुर्गो से आज्ञा लेकर वापिस आते वक्त रास्तें में थोड़ा चटपटा नाश्ता किया और घर चले आए। हम सोच रहें है कि इस बार कार्तिक के महीने में यात्रा देखने फिर जाएंगे।

आप सभी से अनुरोध है कि आप भी अनुगुल की यात्रा करें।

मानवीय स्वभाव का अवलोकन

राकेश कक्कड़
लिपिक
जगतपुरा शाखा–1, जयपुर

वर्तमान परिपेक्ष्य में मानव का स्वभाव उसकी भविष्य की गति, सफलता का निर्धारक होता है। मानवीय स्वभाव एक आकलन है, अपनी व्यक्तिगत जीवन–शैली के गुणों एवं अवगुणों को बिना अपने मुख से बोले सामने वाले व्यक्ति को प्रदर्शित करना। आपका स्वभाव आप स्वयं निर्धारित करते हैं, यह किसी दूसरे प्रभावों से प्रभावित नहीं होता है। आपका स्वभाव आपसी मनोस्थिति की पूर्ण व्याख्या होती है। स्वभाव से हम व्यक्ति के प्रति आकर्षित होते हैं। चाहे वह रंग रूप, जाति या वेशभूषा से हमसे भिन्न हो, अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हमेशा सफलताओं की ओर अग्रसर होते हैं। स्वभाव के महत्व के संबंध में आपको एक छोटी सी कहानी बताना चाहूँगा।

एक बार एक राज्य के राजा ने अपनी राज्य की बुद्धिमत्ता जानने के लिए एक रोचक प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें राजा ने दो हीरे मँगवायें, जिनमें एक असली एवं एक नकली था। राजा ने शर्त रखी कि प्रजा में जो कोई भी असली हीरे की पहचान करेगा, उसे उचित इनाम दिया जाएगा। प्रजा हैरान हो गयी कि दोनों समान दिखने वाले हीरे में से असली हीरा कौन सा है। उसी बीच एक अंधा व्यक्ति वहाँ आया और उसने दोनों हीरों को छुआ तथा राजा को असली हीरा दिखाया। राजा ने आश्चर्यचकित होकर उस अंधे व्यक्ति से पूछा कि जो कार्य भली–भांति देख पाने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति भी नहीं कर पाए वो आप बिना देखे ही कैसे कर लिए। तब वह अंधा व्यक्ति बोला, हे राजन! सूर्य के ताप से आपकी काँच का हीरा या जो नकली हीरा था, वह गर्म हो गया जबकि असली हीरा अभी भी शीतल है। हीरा कभी भी सूर्य के ताप से प्रभावित नहीं होता है। राजा उसकी बात से प्रसन्न हुए और उसे पुरस्कार प्रदान किया।

मैं एक और कहानी बताना चाहूंगा जो मानवीय स्वभाव पर प्रकाश डालती है। यह एक ऐसे युवक की कहानी है जिसे तमाम कोशिशों के बाद भी नौकरी नहीं मिली। निराश होकर वह बाग में जाकर बैठ गया, तभी वहां एक संत आया। संत ने युवक की निराशा का कारण जानने के बाद संत ने उस युवक को निराशा से बाहर निकालने की युक्ति बताई। संत ने अपने झोले से चमकीला पत्थर निकाला और उस बेरोज़गार व्यक्ति को दिया तथा उसे बोला कि तुम इस पत्थर को सही कीमत पर बेचकर आना, मैं तुम्हें कल यहीं मिलूंगा। बेरोज़गार युवक बहुत ईमानदार था, वह उस पत्थर को लेकर पहले तो एक छोटी सी सब्जी की दुकान पर गया वहां उस पत्थर को बेचना चाहा, सब्जी वाले ने कहा कि इस पत्थर का मैं क्या करूंगा, फिर भी इसकी चमक देखकर यह मुझे दे दो, मैं तुम्हे इसके बदले एक किलो सब्जी दे दूँगा। इसके बाद वह बेरोजगार व्यक्ति सुनार के पास गया , तो सुनार ने उस पत्थर के बदले उसे दस हजार देने को कहा उसके बाद वह बेरोजगार हीरा व्यापारी के पास पहुँचा, तब वह व्यापारी उस पत्थर को देखकर अचम्भित हो गया और बोला यह पत्थर तो अमूल्य है। मैं इसका मोल देने में असमर्थ हूँ। बेरोजगार व्यक्ति अगले दिन वापस बाग में गया और उसे वहाँ वह संत मिला तथा उसे पूरी कहानी बताई। संत ने कहा व्यक्ति का मोल भी अमूल्य होता है। हर व्यक्ति स्वयं में अनमोल है। अत: निराश ना होकर अपना स्वाभाविक निराशावादी या चिड़चिड़ापन से दूर रखकर सफलता को पाया जा सकता है।

अत: परिस्थितियाँ कैसी भी हो हमें हमारा स्वभाव स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, हमारे नीचे कार्य करने वालों के प्रति एवं हम जिनके नीचे काम कर रहे हैं, उनके प्रति सद्भाव की भावना रखनी चाहिए।

ज़िद

प्रमोद घाटोड़
अधिकारी
वर्धमान नगर, नागपुर

ज़िद करो तो ऐसी करो कि जिंदगी बदल जाए
ज़िंदगी खराब करने को ज़िद नहीं कहते।
बर्बादी और कामयाबी दोनों के पीछे
ज़िद ही होती है फर्क इतना होता है,
कामयाबी में ज़िद को आगे बढ़ाना पड़ता है
और बर्बादी को रोकने के लिए ज़िद को
पीछे धकेलना पड़ता है
और इसे हार नहीं इसे समझदारी कहते हैं।

कहते तो सब है कि ज़िद होनी चाहिए
लेकिन कहां होनी चाहिए कोई बताता नहीं,
मीरा की ज़िद ने मोहन को पाया और
रावण की ज़िद ने लंका को खोया,
क्यों खोया कोई बताता नहीं।

ज़िद और भरोसा दोनों साथ–साथ चलते हैं
और जब दोनों एक जगह मिल जाए तभी तो कामयाबी को फलते हैं ।
मीरा की ज़िद में भरोसा था मोहन को पाने का
और रावण की ज़िद में अहम् था सीता को पाने का,
अहम् और भरोसा दोनों ज़िद के साथ आ गए
लेकिन अहम् के साथ खो दिया और भरोसे के साथ पा गए ।

ज़िद से कोई भी नहीं छूटा ज़िद सभी को आती है,
यह हमें तय करना है कि ज़िद हमें कहां ले जाती है।
जिद क़भी हमने भी की थी, तभी हम ज़िद पर लिख पाए,
फर्क इतना था इसी ज़िद में बहुत कुछ पा गए
और इसी ज़िद में बहुत कुछ खो आए।
अंत में बस इतना ही कि ज़िद का सफर फर्श से अर्श की ओर होना चाहिए,
अर्श से फर्श के सफर को ज़िद नहीं कहते,
ज़िद चेहरे पे मुस्कान की होनी चाहिए आंखों में आंसू को ज़िद नहीं कहते ।

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

हिन्दी दिवस समारोह की झलकियाँ

पेठों का शहर

श्वेता शर्मा
अधिकारी
टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर

बैंकिंग जीवन के बीच से छोटा सा विराम तो बनता है, वह भी जब एक बैंक के सहकर्मी की शादी हो। मेरे एक बहुत घनिष्ठ मित्र की शादी उसके शहर से दूर किसी दूसरे शहर में तय हुई। मेरे मित्र का फोन आया, उसने कहा–इस अप्रैल की 21 तारीख को मेरी शादी है और तुम्हें अवश्य ही आना है। दोस्त की शादी में जाना तो बनता ही है और फिर जब शादी एक ऐसे शहर में हो जहां देश–विदेश से लोग घूमने आते हों।

इस तरह सप्ताह के बीच में छुट्टी लेकर घूमने जाना कुछ अलग–सा है। मेरी यात्रा की शुरुआत मेरे शहर से दिल्ली तक के लिए ट्रेन से हुई। ट्रेन का सफर भी कुछ अलग–सा होता है। अगर कोई साथ हो तो अच्छा है, वरना अकेले जाना थोड़ा–सा बोरियत भरा होता है, किन्तु इस यात्रा में जल्दी पहुँचना मेरे लिए ज्यादा आवश्यक था ताकि दोस्त की शादी का एक भी कार्यक्रम रह न जाए। लेकिन हमेशा की तरह इस बार भी मेरी रेल गाड़ी(ट्रेन) विलंब थी और इसके कारण गंतव्य स्थान के लिए दूसरी ट्रेन छूट गई। रेलवे स्टेशन पर मुझे दूसरी कोई ट्रेन भी नहीं मिली। थके हाल में भी दोस्त की शादी में पहुँचने के लिए उत्साह कम नहीं हुआ। चूंकि अप्रैल की गर्मी थी और थके हुए होने के कारण ज्यादा मेहनत नहीं की और अपनी एक दोस्त की मदद लेकर मैं गंतव्य स्थल के लिए बस अड्डे पहुँच कर कैब बुक कर लिया ताकि और विलंब न हो।

दीवानी मैं चली उसे ढूँढने बड़े प्यार से .....!

सफर हो और गाने न हो तो मजा कैसा, लेकिन मुझे इस सफर में गाने से ज्यादा मैडम लोग से बात करके ज्यादा राहत महसूस हुई। किसी तरह बहुत कष्टपूर्वक अपनी मंज़िल तक पहुँच ही गयी, जिस जगह में यह कार्यक्रम था, वह शहर के केंद्र में स्थित था जिसके लिए फिर ऑटो करना पड़ा। ऑटो से जाते वक़्त मैंने पूरे रास्ते केवल पेठे की दुकानें देखीं और सबके एक ही नाम 'पंछी पेठा', क्या बात है कैसे पता किया जाए कौन सा असली है और कौन सा नकली। खैर देखते देखते मैं पहुँच गयी शादी के कार्यक्रम में वह भी समय 'पर पूरे दो' साल बाद अपने दोस्त से मिलके जो भाव उभरते हैं, उसे शब्दों में बयां नहीं किए जा सकते। खैर, बता देती हूँ कि दूल्हा भी दोस्त ही है। मेरे पहुँचने के बाद ही सगाई का कार्यक्रम हुआ। तो दो दोस्तों की शादी में भाग लेने का मौका मैंने नहीं खोया। इस प्रकार दोस्त की सगाई और फिर मेहंदी की रस्म में मैं भाग ले पायी। सारे कार्यक्रम के पश्चात मैं अपने कमरे के बाहर से दुनिया के सातवें अजूबे का टॉम्ब देखा और उस अजूबे को देखने की तीव्र इच्छा हुई, किन्तु समय सोने का था तो अगली सुबह के इंतज़ार में सो गयी। वैसे मेरी दोस्त और मैं काफी थक गए थे, इसलिए ज्यादा बात नहीं कर पाए, बस हम दोनों एक दूसरे से मिलके बहुत खुश थे।

अगली सुबह मैं जल्दी उठ गयी ताकि सातवें अजूबे को देखने जा सकूँ। लेकिन सुबह कोई नहीं उठा और मैं तैयार हो के शादी के अगले कार्यक्रम में लग गयी, अगला कार्यक्रम हल्दी का था, जिसमें शामिल होने के लिए हमारे बैंक के दो और मित्र आए। एक इसी शहर की सोम्या थी और दूसरा दोस्त गुजरात से आया था। उन दोनों के साथ मैंने हल्दी के समारोह का पूरा आनंद लिया। उसके बाद हम तीनों दोस्त आखिरकार निकल पड़े अपने मंज़िल की ओर हमारे होटल से हमारी मंज़िल बस एक किलोमीटर ही दूर थी जिसके लिए हमने इलेक्ट्रिक रिक्शा किया और फिर निकल पड़े उस ओर जहां दुनिया के अलग–अलग कोने से लोग आते हैं।

यह कोई जगह नहीं है जिसके बारे हम सब भारतीयों को पता न हो। यह है देश में सबसे प्रसिद्ध ताजमहल आगरा की खूबसूरती और हमारे देश की शान, हम सब लोगों की मनपसंद जगह जहां हर कोई एक बार

ज़रूर जाना चाहता है। पता है जब हम ताजमहल देखने के लिए प्रवेश द्वार से अंदर की ओर जा रहे थे तो सबसे खास चीज़ जो हमने देखी वह थी इसके टॉम्ब जो कि बिलकुल बराबर थे। अंदर प्रवेश करने के बारे में सबसे खास बात यह थी कि इतनी गर्मी के मौसम में भी हमारा दिन खास रहा क्योंकि उस दिन मौसम बिलकुल सुहावना था। अंदर जाने के बाद एक छोटा सा झरना मिला जो बहुत ही खूबसूरत दिख रहा था और ताज महल की खूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था।

चारों ओर बस हरियाली ही हरियाली थी, चारों तरफ क्यारियों में पेड़ लगे हुए थे। लोगों की भीड़ भी गज़ब की थी, सबके चेहरों में उत्सुकता की लहर थी, ठीक वैसा ही हाल हमारा भी था। मैं यहां पहली बार आयी थी। सफ़ेद संगमरमर से इतनी खूबसूरती से ताजमहल को बनाया गया था। ताजमहल के चारों स्तंभ कही से भी देखने पर चारों एक साथ दिख रहे थे, अव्वल दर्जे की कारीगरी देखने को मिली। हमारे देश का इतिहास इस ताजमहल के कारण भी प्रसिद्ध हुआ है। ताज महल के एक ओर यमुना नदी बहती है जो कि काफी सूख गयी थी, क्योंकि गर्मियों का मौसम था। चारों ओर से कितनी बार भी ताजमहल को देख लो, मन नहीं भरेगा, लेकिन तस्वीरें अवश्य ली जा सकती है जिन्हें हम बार–बार देख सकेंगे।

जिस तरफ यमुना नदी थी, उसकी दूसरी तरफ आगरा किला था जिसको देखने का निश्चय हमने अगले दिन के लिए किया, कुछ समय वहां सुकून से बिताने के बाद हमारा वापस आने का समय हो गया था। फिर हम वापस शादी के कार्यक्रम के लिए तैयार हो गए। हमारे दोनों दोस्त दूल्हा और दुल्हन बनकर तैयार थे और हम उन्हें खुश देखकर खुश हो गए। इस शादी के कारण हम अपने दो और मित्रों से मिल पायें जो कि हमारे ही बैंक में कार्यरत हैं, वरना इस व्यस्त दिनचर्या में किसके पास किसी से भी मिलने का समय मिल पाता है। फिर सुबह दोस्त की विधिवत शादी और विदाई भी हो गयी। सुबह मैं और मेरे मित्र एक और दोस्त से मिलने के लिए निकाल पड़े आगरा किले की तरफ जिसे आगरा में लोग 'लाल किला' भी कहते हैं।

इस किले में अंदर जाने के लिए टिकट की ज़रूरत पड़ती है। अंदर हमें बहुत सी ऐतिहासिक तथ्यों को जानने का मौका मिला। हम वहाँ के

झरोकों से भी ताजमहल को देख सकते थे। आगरा किले में एक ऐसा झरना है जिससे गर्मियों में ठंडा पानी और सर्दियों में गरम पानी निकलता और इसकी संरचना पुराने जमाने की है। आगरा किला भी हरियाली से भरपूर था। एक ऐसा भी झरोखा हमने देखा जिसमें से दूसरी तरफ नज़ारा नहीं दिखाई देता है, लेकिन सिक्के के फ़ेके जाने पर दूसरी तरफ वह सिक्का गिरता अवश्य है। इसका फायदा यह है कि गर्मियों में ठंडी हवा उस झरोखे से आती है। इसका रखरखाव सही तरीके से किया जाता है। हम लोग काफी सुबह चले गए थे, इसलिए हमें ज्यादा भीड़ नहीं दिखी। हमारी आगरा की दोस्त हमारे लिए आगरा के मशहूर 'पंछी पेठे' वाले के यहाँ से पेठे लेकर आयी थी, कहते हैं – आगरा गए और पेठे न खाये तो क्यों ही आगरा गए? इस तरह हम पेठों के शहर शादी के बहाने घूम आए। हमारे देश का इतिहास काफी पुराना है और यह दो इमारत उनकी दास्तां बयां करता है। इसकी खासियत को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है, इसलिए एक बार आगरा जाए और पेठों के साथ–साथ इस शहर की खूबसूरती का भी आनंद लें। इस तरह मेरी आगरा की यात्रा सफल रही।

अनुपूरक वेतन (सप्लिमेंट्री सैलरी)

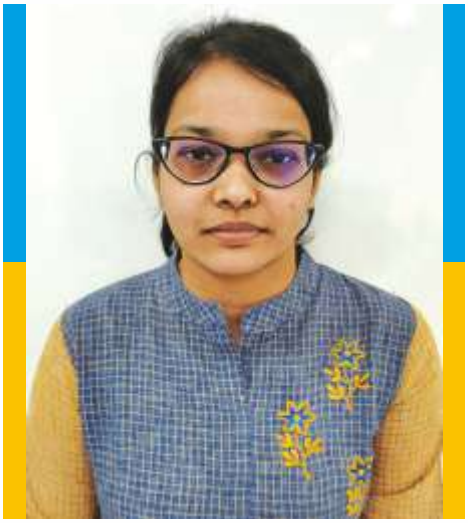

डिंपल गुप्ता
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, मध्य दिल्ली

नियमित वेतन से अलग जब किसी काम के लिए विशेष वेतन का भुगतान किया जाता है तो उसे अनुपूरक वेतन कहते हैं। हमारे बैंक में दफ्तरी विशेष वेतन, रोकड़िया विशेष वेतन, ड्राइवर विशेष वेतन आदि अनुपूरक वेतन के कुछ उदाहरण हैं। पहले यह प्रक्रिया मैनुअल हुआ करती थी जिसमें एक इनपुट शीट भरकर संबंधित अंचल कार्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन अनुभाग को भेजी जानी होती थी। लेकिन तकनीकी के बढ़ते चलन के साथ-साथ इस प्रक्रिया को भी डिजिटल कर दिया गया है। अब यह प्रक्रिया एचआरएमएस पैकेज के माध्यम से उपलब्ध है जिसमें मेकर और चेकर मोड लागू कर दिया गया है।

कई बार कर्मचारी स्वयं अपना विशेष वेतन या अनुपूरक वेतन एचआरएमएस में दर्ज करने का प्रयास करते हैं लेकिन मेकर-चेकर प्रक्रिया के अनुसार यह संभव नहीं है। प्रत्येक शाखा/कार्यालय से एक कर्मचारी मेकर और दूसरा कर्मचारी चेकर की भूमिका निभाता है। मेकर-चेकर का निर्माण एचआरएमएस में शाखा/कार्यालय प्रभारी द्वारा किया जाता है। मेकर-चेकर बनाने के लिए शाखा/कार्यालय प्रभारी निम्नलिखित पाथ का उपयोग कर सकते हैं:

HRMS pkg → Main Menu → People Tools → Security → Module Security → Module User Maintenace

यहां पहुंच कर जिन कर्मचारियों को मेकर/चेकर बनाना है उनकी कर्मचारी संख्या दर्ज करें। इसके बाद सर्च बटन पर क्लिक करें और ड्रॉप डाउन मेन्यू में जाकर कर्मचारी संख्या और नाम के सामने दिए गए बॉक्स को टिक करें। इसके बाद ड्रॉप डाउन मेन्यू से CAN_ALLOW_ENCASH विकल्प को चुनें और मेकर के लिए CAN_ALLOW_ENCASH_MAKER और चेकर के लिए CAN_ALLOW_ENCASH_CHECKER बॉक्स को टिक करें। फिर नीचे ग्रांट एक्सेस बटन पर क्लिक करें।

यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि एक कर्मचारी को केवल एक ही भूमिका दी जा सकती है यानी किसी एक को मेकर या चेकर बनाया जा सकता है। शाखा/कार्यालय के किसी भी कर्मचारी को अनुपूरक वेतन की पात्रता होने पर मेकर और चेकर ही एंट्री को एचआरएमएस पैकेज में दर्ज और अनुमोदित कर सकेंगे।

अनुपूरक वेतन भत्ते के लिए पैकेज में आवेदन करने के लिए मेकर को पहले अनुपस्थिति शीट दर्ज करनी होती है। अनुपस्थिति शीट दर्ज करने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जिस कर्मचारी को अनुपूरक वेतन दिया जाना है वह कितने कार्य दिवस पर उपस्थित रहा/रही है।

एचआरएमएस पैकेज में अनुपस्थिति शीट दर्ज करने के लिए मेकर द्वारा अपनायी जाने वाली प्रक्रिया : Main Menu → Global Payroll & Absence Management → GP Transactions → Allowance and Encashment Entry → Employees Absence Sheet → Add a New Value → Enter Month Number → Enter year → Click on Search Employee → From the list Select the concerned employee → Tick on Absence Days→ Save and Submit the same.

मेकर द्वारा एंट्री दर्ज किए जाने के बाद चेकर को अनुपस्थिति शीट का अनुमोदन करना होता है। अनुपस्थिति शीट के अनुमोदन के बाद मेकर द्वारा अनपूरक वेतन (सप्लिमेंट्री वेतन) दर्ज किया जाना होता है। इसे दर्ज करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जानी है :

Main Menu → Global Payroll & Absence Management → GP Transactions → Allowance and Encashment Entry → Allowance and Encash Maker → Enter Employee Id → Select allowance type → Enter the required details → Save and Submit the same.

मेकर द्वारा अनुपूरक वेतन दर्ज किए जाने के बाद चेकर को निम्नलिखित प्रक्रिया के माध्यम से इसका अनुमोदन करना है :

Main Menu → Global Payroll & Absence Management → GP Transactions → Allowance and Encashment Entry → Allowance and Encash Checker → Select the allowance type → Click on Check Box to select → Click on Approve.

टेलर बी के लिए अनुपूरक वेतन भत्ते का अनुमोदन करने से पहले शाखा प्रभारी/चेकर ध्यान रखें कि वे एम.आई.एस. रिपोर्ट सं. 201060 अवश्य जेनरेट करें और यह सुनिश्चित कर लें कि जिस अवधि के लिए कर्मचारी को टेलर बी का अनुपूरक वेतन भत्ता दिया

जाना है उतनी अवधि के लिए संबंधित कर्मचारी सीबीएस में टेलर बी रहा हो।

अनुपूरक वेतन भत्ते के लिए मासिक आधार पर आवेदन किया जाना आवश्यक होता है। एचआरएमएस पैकेज में पिछले महीनों के लिए इस भत्ते का आवेदन करने की अनुमति नहीं दी गई है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

सभी हिन्दी प्रेमियों के लिए अत्यंत हर्ष व उत्साह का विषय है कि अगले वर्ष 2023 की शुरुआत में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जाने वाला है। इस का आयोजन दिनांक 15-17 फरवरी 2023 को फिजी में किए जाने का प्रस्ताव है। भारतीय विदेश मंत्रालय और फिजी सरकार द्वारा संयुक्त रूप से इसका आयोजन किया जा रहा है। फिजी में हिन्दी की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये भारत की ओर से एक भाषा प्रयोगशाला भेंट की जायेगी जिसके माध्यम से लोगों को सुगमता से हिन्दी सीखने में मदद मिलेगी। विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन को लेकर तीन उप समितियों का गठन किया गया है जो सम्मेलन के कार्यक्रम, स्मारिका और हिन्दी सम्मान प्रदान किए जाने से संबंधित हैं। संयुक्त राष्ट्र (2020) के अनुसार, फिजी की जनसंख्या करीब 8,96,000 है और उनमें से 30 प्रतिशत से अधिक लोग भारतीय मूल के हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, इस सम्मेलन में विश्व भर से हिन्दी विद्वान,साहित्यकार, पत्रकार तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के प्रति जागरुकता को बढ़ावा देने, समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिन्दी साहित्य के प्रति सरोकारों का सुदृढ़ करने, जीवन के विभिन्न आयामों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के आत्मीय भावनाओं को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1975 में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला की शुरुआत की गयी थी। इस बारे में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने पहल की थी। पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ था जिसमें प्रसिद्ध समाजसेवी एवं स्वतन्त्रता सेनानी विनोबा भावे ने अपना विशेष सन्देश भेजा था।

प्रारम्भ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष आयोजित किया जाता था लेकिन अब यह अन्तराल घटाकर तीन वर्ष कर दिया गया है। अब तक 11 विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं, और बारहवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन फ़िजी में किए जाने का प्रस्ताव है।

(साभार विकिपीडिया एवं दैनिक समाचार पत्र)

हथौड़ा और चाबी

गुड्डी रजक
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

शहर की तंग गलियों के बीच एक ताले की पुरानी दुकान हुआ करती थी। जिन लोगों का ताला नहीं खुलता था, वे उस दुकान पर जाते, ताला तोड़ने वाले व्यक्ति से अपने ताले को तोड़ने का आग्रह करते थे। उसके पास एक हथौड़ा था जिसकी मदद से वह जिद्दी ताले को तोड़ता था। एक दिन हथौड़े के मन में आया कि इतने भारी भरकम ताले को एक छोटी सी चाबी कैसे खोल देती है।

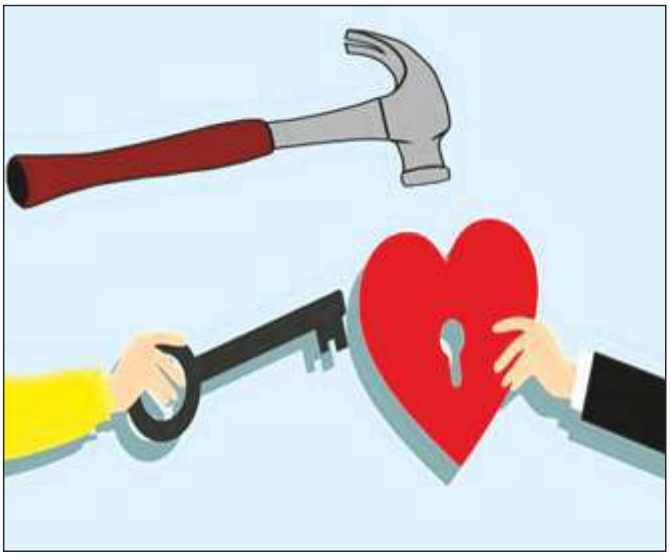

शाम के समय जब दुकान बंद हो गई तब हथौड़े ने चाबी से पूछा : तुम इतने भारी भरकम ताले को कैसे आसानी से खोल लेती हो। तुम बिना कोई प्रहार किए ताले को प्रेम से खोल लेती हो। चाबी कहती है मैं प्रेम से हृदय में पहुँचकर उसके मन से धीरे से आग्रह करती हूँ, तब जाकर ताला खुलता है। उसके हृदय में स्थान बनाती हूँ। उसे प्रहार से नहीं प्रेम से जीतती हूँ।

ठीक उसी प्रकार मानव स्वभाव होता है, जिस प्रकार आप दूसरों के प्रति अपना व्यवहार रखेगें ठीक उसी तरह आपको भी प्रेम, सम्मान प्राप्त होगा। क्रोध, ईर्ष्या करने से आप लोगों से दूर होते जाएंगे। किसी को जीतना है तो बल पूर्वक नहीं बल्कि प्रेम से जीता जा सकता है। किसी भी चीज के साथ आप अगर व्यवहार कठोर रखते हैं तो उसका परिणाम गलत ही होगा। मनुष्य के अंदर प्रेम, घृणा, दोष, क्रोध, लोभ विभिन प्रकार की भावनाएं होती हैं, उसे अपने विवेक से अपने कार्य को करना होता है।

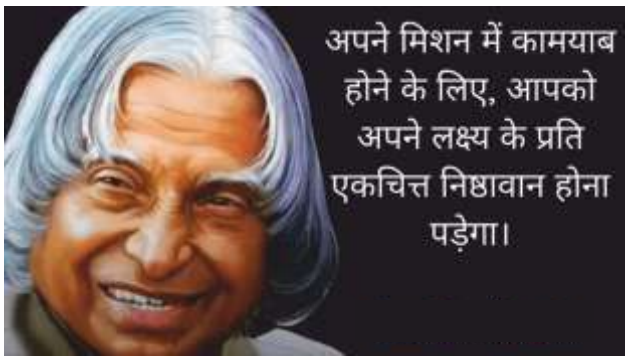

सूर्यास्त होने तक मत रूको।
चीजें तुम्हें त्यागने लगें,
उससे पहले तुम्ही उन्हें त्याग दो।

हे प्रियवर तुम चली आना

सचिन कुमार
परि. अधिकारी
वसूली विधि व धोखाधड़ी निवारण विभाग
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

रात की उदासी में,
चाँदनी की उजालो में,
सितारों की चमचमाहट में,
पायलों की झंकार में,
ढूँढ़ती है बस तुम्हें, मेरी नजरें
हे प्रियवर तुम चली आना ।

एहसासों के समुंदर में,
सावन की बरसातों में,
फूलों की खुशबुओं में,
बाँसुरी की मधुर तानो में,
ढूँढ़ती है बस तुम्हें, मेरी नजरें
हे प्रियवर तुम चली आना ।

सर्दियों की कपकपाहट में,
चिड़ियों की चहचहाहट में,
भोर की सुगबुगाहट में,
अपने प्यार के लफ्जों को
कहते ओठों की थरथराहट में,
ढूँढ़ती है बस तुम्हें, मेरी नजरें
हे प्रियवर तुम चली आना ।

तुम अविरल गंगा की बहती
धारा की भाँति चली आना ।
मैं रत्नाकर की भाँति, आँसु समेटे हुए
एक अधूरापन सा, खालीपन सा,
बहती हवाओं के भँवर में प्रतीक्षारत हूँ,
हे प्रियवर तुम चली आना ।
हे प्रियवर तुम चली आना ।।

लोक परम्परा से आगत शब्दों, प्रतीकों, मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों, आख्यानों, मिथकों आदि में समाया है, जनसरोकार

डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय
सहायक महाप्रबंधक
(सेवानिवृत्त)

लोक परंपराओं और जनसरोकार का अन्योन्याश्रय संबंध है। लोक परंपरा के अंतर्गत वह सब कुछ आता है जिनसे आम लोगों का सरोकार है या जो लोगों के जीवन के भाग हैं। लोक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के लोक धातु अर्थात देखने के अर्थ में प्रयुक्त धातु से हुई है। लोक शब्द का वैदिक अर्थ प्रकाश, खुली जगह, दृश्य जगत है। लोक शब्द के विस्तृत अर्थ के अंतर्गत तीनों लोक अर्थात आकाश, पाताल, पृथ्वी और चौदहों भुवन भी आ जाते हैं। विद्वानों की मान्यता है कि महाभारत काल में इसके इस व्यापक अर्थ को संकुचित करके पृथ्वीलोक और उसके निवासी कर दिया गया जिसका अर्थ हुआ सामान्य जीवन और सामान्य भाषा। लोक जीवन में प्रयुक्त होने वाले सभी व्यवहार जीवन व्यवहार में घुल मिलकर लोक परंपरा बन गए। इसके अंतर्गत लोकगीत, लोकगाथा, लोक चारित्र्य, लोकाचार, लोक धर्म, लोक प्रसिद्धि, लोक मातृका, लोक मार्ग, लोक यात्रा, लोकरंजन, लोक विरुद्ध, लोक वृत्त, लोक स्थिति, लोक हित आदि आते हैं।

इसके साथ-साथ, सामुदायिक अस्मिता के लिए आवश्यक वीरगाथा गान, अनुभव सिद्ध नीति वचन, मुहावरा, लोकोक्तियाँ, प्रचलित लोक विश्वास, प्रतीक, बिम्ब, मिथक और मान्यताएं आदि शामिल हैं। लोक परंपरा में केवल मनुष्य ही नहीं, मनुष्य का समूचा आत्मीय परिवेश, जैसे नदी-पर्वत, गाँव-घर, पेड़-पौधे, वनस्पति जगत, ऋतु, पर्व, अंधेरे-उजाले, चंदन-पानी, ताल-तलैया, हल्दी-दूब, कलश, दधि-अक्षत, सील-बट्टा, ढोल-मंजीरा, खंजड़ी, बाँसुरी, सींगा, वीणा-सरोद, शंख-घंटा-घड़ियाल, आदि जैसे जीवन के रास-रंग, सुख-दुःख, संयोग-वियोग आदि से जुड़े सारे क्रियाकलाप समाहित हैं। भारत की विभिन्न भाषाओं और बोलियों में यह परंपरा पाँच-सात हज़ार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। भारतीय लोक परंपरा के शब्द चाहे वे लिखित हों या वाचिक हों, संवेदना के धरातल पर ज़बर्दस्त अर्थ संप्रेषित करते हैं। यहाँ तक कि सांकेतिक भाषा के प्रयोग का भी सुष्ठु रूप प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र के गोंधली, भोपे, नंदी बैल वाले समुदायों के लोग 'कर पल्लवी' नामक सांकेतिक भाषा का प्रयोग करके व्यक्ति का नाम, इतिहास, पारिवारिक घटनाओं आदि का ज़िक्र करते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के गुप्तचर इन्हीं समुदायों के सदस्य हुआ करते थे। भोजपुरी इलाके (बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश) में नहछुआ (विवाह के समय का गीत), सहाना (बेटे के विवाह का गीत) बरनेत, सोहर, चुमावन, कोहबर, कन्यादान, जेवनार, कजरी आदि के गीतों को देखें तो इसका एक-एक शब्द हमारी समृद्ध विरासत की सरसता को अपने में समाए हुए हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है:

लाढ़ो कलइयाँ सुकुमार हो चुभ जाला कंगनवां, भसूर है दिलदार हो।
लाढ़ो अंगुलियाँ सुकुमार हो, चुभ जाला अँगूठियाँ ..

भारत की लोक परंपरा काफी सघन और अंतर्विष्ट है। विभिन्न भाषाओं और बोलियों का यदि भाषाजनित ऊपरी कवच तोड़ दें तो उसके अंदर से माँ की ममता, बहन का स्नेह, भाई का बंधुत्व, पत्नी का समर्पण और प्रेम, मित्र की मित्रता और शत्रु की शत्रुता जन सरोकारों से ही जुड़ी हुई है। लोक परंपरा से जुड़े आख्यानों, पर्वों से संबंधित गीतों में रोज़ी रोटी, व्यापार-रोज़गार, विवाह-संयोग-वियोग, ख़रीद-फ़रोख़्त, लाभ-हानि, बाढ़-सूखा, अकाल-भूकंप, बीमारी-महामारी, भूख-प्यास, अभाव

आदि के बारे में विपुल सामग्री भरी हुई है। लोक परम्परा से जुड़े गीत/कविताएँ सामान्य चीज़ों में भी कैसे ख़ूबसूरती ढूँढ लेती हैं, उसकी एक बानगी देखिए :

नाज़ुक ये ककड़ियाँ ले लो,
लैला की उँगलियाँ ले लो,
मजनू की पसलियाँ ले लो
नाज़ूक ये ककड़ियाँ ले लो।

लोक परंपरा से सामाजिक सरोकार कैसे जुड़ जाता है, इसे पंडित चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की सुप्रसिद्ध कहानी उसने कहा था के इस प्रसंग में देखा जा सकता है; किशोर लहना सिंह का जो रिश्ता एक अनजान लड़की से अमृतसर के बाज़ार में रोज़ – रोज़ मिलते हुए हो जाता है, वह अचानक एक दिन टूट जाता है, जब छेड़खानी की बिंदु 'सगाई हो गयी' प्रश्न के हाँ उत्तर से एकदम सकपका जाती है। पर, तब वह रिश्ता गहरे अवचेतन में चला जाता है और कहानी के नायक लहना सिंह को उत्सर्ग की अद्भुत शक्ति दे देता है। इसी तरह से, अन्य भाषाओं में लोकगीतों की बड़ी ही व्यापक और समृद्ध परंपरा मिलती है। उदाहरण के लिए, तेलगु भाषा का यह मार्मिक लोकगीत देखिए, माँ का घर छोड़कर बेटी पहली बार अपनी ससुराल जा रही है। माँ समधन से अपनी बेटी के बारे में कहती है कि मेरी बेटी को भी अपने ही बच्चों की तरह समझिएगा। धीरे–धीरे बताकर उसे गृहस्थी के कार्यों में दक्ष कर दीजिएगा। इसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि यह अपने से लेकर कुछ खाने वाली नहीं है। अतः आप ही समय–समय पर इसे भोजन परोस दीजिएगा।

ई बाला यरुगदु एमियुनैन
मी बाला लो नोक बालगा चूडु
मेल्लगा नेर्पुतो पनि नेर्पवम्मा
आकलेरिगि अन्नंबु पेट्टिन दाका
अडुग नेरदु, नीवु अडिगि पेट्टम्मा ।

लोक परम्परा में मुहावरों और लोकोक्तियों का माध्यम जन सरोकारों को काफी चुटीले ढंग से अभिव्यक्त करने में बड़ी कारगर भूमिका का निर्वाह करता है। 'सिर धुनना', 'आँख का अंधा नाम नयन सुख', 'नौ दो ग्यारह होना', 'दुकान बढ़ाना', 'हाथ पीले करना', 'दाल न गलना', 'भगवान को प्यारा हो जाना' आदि जैसे मुहावरे सशक्त जन सरोकारों के उदाहरण हैं। लोकोक्तियाँ भी जन सरोकारों से बड़ी गहराई तक जुड़ी हुई हैं। लोकोक्तियां प्रायः कहानियों, कविताओं, जीवन के मधुर–कटु–तिक्त अनुभवों तथा पौराणिक कथाओं आदि से जुड़ी होती हैं और ये अत्यंत संप्रेषणीय होती हैं। उदाहरण के लिए, 'एक पंथ दो काज', 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' 'जाके पाँव न फटी बेवाई', 'वो क्या जाने पीर पराई' आदि

बहुत कुछ कहती हैं। हिंदी की बोलियों/उपभाषाओं यथा– अंगिका, वज्जिका, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मगही, कुरमाली आदि में लोकोक्तियाँ जीवन के हर पक्षों, जैसे– मंगल, भक्ति, संस्कार, श्रम गीत (जैसे – रोपनी, सोहनी, कटनी, जाँतसार) आदि को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। ऋतुओं से संबंधित गीत जैसे– झूमर, कजरी, गोधन, पीड़िया, बहुरा, फगुआ, चैता, जोगिरा, चउमासा, बारहमासा आदि हैं। इनमें जन सरोकारों की ज़बर्दस्त अभिव्यक्ति मिलती है। पुत्र जन्म के समय गाया जाने वाला यह गीत कितना आनंद और उत्साह से ओत–प्रोत है :

आजु भइलै नंदलाल, बधइया बाजन लागे।
सासु जे अइली देवता पुजावन,
देबो कँगनवा गढ़ाय।
देवता पूजन में कसर– मसर करिहें, लेबो काँनवा छिनाय।
गोतनी जे अइहें सउरी लिपन के, देबो तिलरिया गढ़ाय।
सउरी लिपन में कसर–मसर करिहें, लेबो तिलरिया छिनाय।
ननदी जे अइली आँख अँजन के, देबो बेसरिया गढ़ाय।

लोक परंपरा में पहेलियों के माध्यम से जन सरोकारों को गहरी पैठ मिली है। अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ी पर भारतेंदु हरिश्चंद्र की यह पहेली द्रष्टव्य है:

सब गुरुजन को बुरो बतावै,
अपनी खिंचड़ी अलग पकावै,

भीतर तत्व न झूठी तेज़ी,
क्यों सखि साजन नहीं अंग्रेज़ी।
अमीर ख़ुसरो कि यह पहेली भी मर्म भेदी है :
खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वा की धार,
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।

लोक परंपरा में जन सरोकारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का सटीक प्रयोग मिलता है। ये प्रतीक सदा अपने से इतर का संदेश देते हैं। इनका प्रयोग वैदिक काल से ही मिलता चला आ रहा है। ये प्रतीक प्रकृति, पुरुष, लास्य, दूब, दधि भाव, अच्छत–कुंकुम, मौली बाँधना, सूर्य–चंद्रमा, शंकर भाव, राम–कृष्ण–कन्हैया विवाह, कन्या, पुत्र, हंस, वरुण, त्रिशूल, चेतक, सिंह, नदी, लहर, सागर, नाव, पथ, मंज़िल, सेतु, दीप, अंधकार, प्रकाश, नक्षत्र आदि तमाम वस्तुओं के रूप में उपलब्ध हैं और इन्हें प्रतीक रूप में प्रस्तुत करके बहुत कुछ कहा–लिखा गया है। हंस 'आत्मा' का प्रतीक माना गया है, हंसा जाई अकेला, वहीं पुष्प को प्रेम का प्रतीक माना गया है। भारतीय जनमानस में श्रवण कुमार मातृ–पितृ भक्त के रूप में, दधीचि की अस्थियां सर्वोच्च उत्सर्ग के रूप में, भगीरथ का गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए किया गया प्रयास भीषण पुरुषार्थ के रूप में, महाराज हरिश्चंद्र सत्य की प्रतिमूर्ति के रूप में तथा श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया है और इसी तरह के तमाम प्रतीकों से भारतीय साहित्य और जन मानस भरा पड़ा है।

लोक परंपरा में लोरियों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है तथा ये प्रत्यक्ष रूप में जन सरोकारों की ही अभिव्यक्ति हैं। ये लोरियां देश भक्ति, प्रेम, करुणा, सर्वधर्म समभाव, भाईचारा, संवेदना आदि से ओत–प्रोत होती हैं। ऐसी मान्यता है कि इन लोरियों में इतना सामर्थ्य है कि वे साधारण से साधारण पुरुषों और महिलाओं में अदम्य साहस व ऊर्जा का संचार करके उन्हें असाधारण मानव बना देती हैं। जन मानस में यह प्रसिद्धि है कि राणा सांगा, महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज, छत्रसाल, बाबू कुँवर सिंह आदि जैसे महापुरुषों को महाबली बनने की प्रेरणा इन लोरियों ने ही प्रदान की है।

लोक परंपरा में जन सरोकारों को बिंबों के माध्यम से बख़ूबी अभिव्यक्ति मिली है। लोक परंपरा में/साहित्य में घ्राणज, स्पर्शज, चाक्षुष तथा श्रौतज आदि सभी प्रकार के बिंबों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। किसी ग्रामीण को या भुट्टे के प्रेमी को जब भुना हुआ भुट्टा मिलता है तो उसकी ख़ुशी को इन पंक्तियों में काफ़ी ख़ूबसूरत ढंग से वर्णित किया गया है :

सिके हुए दो भुट्टे सामने आए,
तबीयत खिल गई, ताज़ा स्वाद मिल गया,
दूधिया दानों से तबियत खिल गई,
दाँतों की मौजूदगी का फल मिल गया।

लोक परंपरा में प्रचलित गीतों में प्रयुक्त शब्दों में आए बिंब इस दृष्टि से विलक्षण हैं कि उनमें पूरे परिवेश को तथा उससे पड़ने वाले प्रभाव को झंकृत एवं प्रत्यक्ष करा देने की अद्भुत सामर्थ्य है। एक उदाहरण देखिए :

कवनि उमरिया सासु, निबिया लगाएन,
कवनि उमरिया गए बिदेसवा हो राम।
खेलत कुदत बहुअरि, निबिया लगाएन,
रेखिया भिनत में बिदेसवा हो राम।
फरि गै निबिया लहसि गै डरिया,
तबहू न आए तोर बिदेसिया हो राम।

इसमें नीम का पेड़ प्रियतम ने बाल्यावस्था में लगाया था और रेख भींगते ही परदेश चले गए। नीम फलने लगा और डाली फलों के भार से झुकने लगी, पर प्रिय नहीं आए। इस बिंब का अभीष्ट केवल समय बोध कराना ही नहीं है अपितु प्रकृति के क्षेत्र में जो कार्य हुआ और मानवीय प्रेम व्यापार में प्रेम का बिरवा लगाकर भी उसकी सफलता में विलंब बना रहा, उसे दर्शाना ही इस गीत का प्रयोजन है। इसी तरह से, लोक परंपरा में प्रचलित गीत केवल अर्थ और बिंब ही नहीं होते बल्कि वे जन सरोकारों से इतने संश्लिष्ट होते हैं कि इन गीतों को पढ़ते/सुनते समय हर सहृदय की आँखें नम हो जाती हैं। चाक्षुष बिंबों के प्रयोग में महाकवि कालिदास बेजोड़ कवि हैं। इनके सभी ग्रंथों यथा– 'रघुवंशम्,' 'कुमारसंभवम्,' 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'मेघदूत' आदि में चाक्षुष बिंबों की भरमार है। श्लोकों को पढ़ते जाइए और ऐसा लगेगा मानों दृश्य आपकी आँखों के सामने से गुज़रते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए 'रघुवंशम्' का यह श्लोक देखिए :

इनदीवरश्यामतनुनृपोऽसो त्वं रोचनागौरशरीरयष्टिः।
अन्योन्यशोभापरिवृद्धये वां योगस्तडित्तोयदयोरिवास्तु।

अर्थात, ये राजा नील कमल के समान श्याम वर्ण हैं, तुम गोरोचन जैसी गोरी हो। अतः यदि इनके साथ तुम्हारा विवाह हो जाएगा तो तुम ऐसी सुंदर लगोगी जैसे बादल के साथ बिजली सुंदर लगती है। गोस्वामी तुलसीदास दास जी जन कवि हैं और उनका 'राम चरित मानस' श्रौतज बिंबों का अद्भुत ख़ज़ाना है। पुष्पवाटिका में श्रीराम जब पहली बार जानकी जी को देखते हैं तो उनकी कैसी मनः स्थिति होती है, उसका अद्भुत, सटीक एवं सजीव वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में किया है :

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि।
कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही।
मनसा विस्व बिजय कहँ कीन्ही।

कभी –कभी लोक गीतों में ऐसे बिंबों का प्रयोग मिलता है जो ऊपर से तो बड़े अटपटे–से लगते हैं पर उन्हें यदि हम पूरे वातावरण के आलोक में देखें तो उनकी सरसता प्रकट होगी। उदाहरण के लिए, विवाह का यह गीत देखें जिसमें कन्या, आम, पुत्र और हंस ये चार पदार्थ लिए गए हैं और इन चारों के साथ घर का आँगन, बाग़, द्वार और रस का तथा धर्म, सेवा, तप और दान का संबंध जोड़ा गया है। इसका अर्थ समझने के लिए हंस का वास्तविक अर्थ न लेकर उसका प्रतीकात्मक अर्थ कन्या का वर लेना होगा, तब हम भारतीय परिवार का वह मांगलिक चित्र मन में ग्रहण कर सकेंगे जिसे उतारने की कोशिश इस गीत में की गई है :

काहे बिनु सून अँगनवा ए बाबा, काहे बिनु सून लखराउ,
काहे बिनु सून दुअरवा ए बाबा, काहे बिनु पोखरा तोहार।
धिया बिनु सून अँगनवा ए बेटी, कोइलरि बिनु लखराउ,
पूता बिनु सून दुअरवा ए बेटी, हंस बिनु पोखरा हमार।
कइसे के सोहे अँगनवा ए बाबा, कइसे सोहे लखराउ,
कइसे के सोहे दुअरवा ए बाबा, कइसे सोहे पोखरा तोहार ।
धरम से ए बेटी, बेटी उपजि हैं, सेवा से आम तइयार,
तपवा से ए बेटी, पुतवा जननिहें, दान से हंसा मँजधार।
का देइ बेटी समोधबै ए बाबा, का देइ अमवा के गाछ,
का देइ पुतवा समोधबै ए बाबा, का देइ हंसा मँजधार।
धन देइ बिटिया समोधबै ए बेटी, जल देइ समोधब लखराउ,
भुँई देइ बिटिया पुतवा समोधबै ए बेटी, अन देह हंसा मँजूर।

ऐसे ही तमाम लोकगीत भारत की और दुनिया की सभी भाषाओं/बोलियों में रचे–बसे हैं जो जन सरोकारों से अत्यंत गहराई तक जुड़े हुए हैं। कश्मीरी भाषा का यह गीत जन सरोकार का ही तकाज़ा है जिसमें कवि आपसी एकता को सुदृढ़ करके शांति, स्वाधीनता और एक ख़ुशहाल नई ज़िंदगी पाने के लिए जनता का आह्वान करता है :

वल अस्ति समौ वल अस्ति रलौ,
नल अस्ति ड्यकस नौ नूर मलौ।
अदलस इंसाफस ग्यूर करौ,
जुल्मस गटवालौ ग्यूर तुलौ।
अरमानन पन्यन व्यूर तुलौ,
इन वालिस सुबहस दूर गरौ।।

उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ है, आओ, एक साथ, एक साथ आगे बढ़ो, अपने माथे पर नई रोशनी मलो। इंसाफ और सच्चाई के झूले पर पैंगे लो, जुल्म पर अँधेरा बरसाकर उसे चकरा दो। अपने अरमान का पराग हासिल करने के लिए एक साथ आओ, आओ, नई सुबह के शृंगार के लिए बुन्दे बनाओ।

पंजाबी में लोहड़ी का यह गीत देखिए :

सुंदर मुन्दरिए तेरा कौन बिचारा,
दुल्ला भट्ठीवाला, दुल्ले ने धी विहाई
सेर शक्कर पाई, कुड़ी दे बोझे पाई।

भारत के महान ऐतिहासिक एवं पुराण ग्रंथ 'महाभारत' में जन सरोकारों से जुड़े असंख्य उदाहरण भरे पड़े हैं। एक उदाहरण देखिए :

यथा रुरु: शृंगमयो पुराणं हित्वा त्वचं वाप्युरगो यथा च ।
विहाय गच्छत्यनवेक्ष्यमार्गं तथा विमुक्तो विजहाति दुखम।
(महाभारत शांति पर्व)

अर्थात, हमें दु:ख को अंतिम नहीं मानना चाहिए, बल्कि जीवन का पड़ाव मानना चाहिए। दु:ख को भी उसी तरह से लेना चाहिए जैसे मृग झड़े हुए सींग को, साँप तजे हुए केंचुल को और पक्षी नदी के किनारे खड़े वृक्ष के नदी में बह जाने पर उस पर लगे अपने घोंसले को लेता है।

इसी तरह से, जन सरोकारों के मामले में मिथकों की भी बड़ी भूमिका है। अंग्रेज़ी का मिथ शब्द ही आज मिथक के रूप में प्रचलित हो गया है। यह मिथक स्वयं में कोई कथा नहीं होता पर वह कथा के लिए कच्चा माल ज़रूर प्रस्तुत करता है। हिन्दी में पहले जिन गल्प कथाओं, पुराकथाओं/आख्यानों का प्रयोग मिलता है, वे ही आधुनिक काल में मिथक के रूप में व्यवहृत होने लगे हैं। मिथकों की

एक अपनी अलग ही दुनिया है जो भारत सहित दुनिया के सभी देशों की संस्कृति में, सभ्यताओं में अलग–अलग रूपों में अनूठे ढंग से पाए जाते हैं। मिथक मूल रूप से वे सांस्कृतिक तत्व हैं जिनमें विश्व की साझी समझ सन्निहित है और ये व्यक्तियों तथा समुदायों को आपस में बाँधते हैं। पुनर्जन्म, स्वर्ग–नरक, देवदूत–दानव, प्रारब्ध, मुक्त इच्छा, पाप, शैतान, मोक्ष आदि में जन सरोकार अपनी विराटता एवं व्यापकता में समाया हुआ है। वनस्पति, जलचर से संबंधित तमाम मिथक मिलते हैं। उदाहरण के लिए वृषभ, सर्प, गरुड़, गज–ग्राह आदि। हरिहर क्षेत्र सोनपुर(बिहार) में लगने वाला विशाल पशु मेला तथा इससे जुड़ी गज–ग्राह की कथा मिथक होने के साथ–साथ जन सरोकारों से भी काफ़ी गहरे जुड़ी हुई है। शैल चित्रों, पूर्वेतिहास तथा कबिलाई समाजों आदि के मिथक भी काफ़ी लोकप्रिय एवं प्रचलित हैं। मातृ सत्तात्मक व्यवस्था के संकेत के रूप में अहिल्या का मिथक सभी को ज्ञात है। विष्णु मोहिनी, सती का मिथक, स्कंद की छह माताओं का होना आदि तमाम मिथक समाज में ख़ूब प्रचलित हैं। ग्रह–नक्षत्रों से जुड़े मिथक भी समाज में ख़ूब हैं, जैसे – सूर्य परम तेजस्वी है, विश्वकर्मा की पुत्री संजना उनकी पत्नी हैं तथा अश्विनी कुमार उनके पुत्र हैं। सोम–चंद्रमा, इन्होंने तारा से विवाह किया तथा बुध नामक पुत्र हुआ। इसी तरह के तमाम मिथक मंगल, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु से जुडे हुए हैं, जैसे – मंगल युद्ध देवता कार्तिकेय से सम्बंधित हैं, शुक्र–भृगु पुत्र हैं, शनि अंधकार के देवता हैं, इत्यादि। इस प्रकार के तथा इसी तरह के अन्य प्रकार के मिथक प्राचीन ग्रीक, चीनी, मेसोपोटामिया, बेबीलॉन, असीरिया, सुमेर, रोम, पर्शिया, माया आदि तमाम संस्कृतियों में भरे पड़े हैं तथा इन मिथकों की नाभि मौखिक परंपराएँ हैं। ये पूर्वेतिहास तथा इतिहास से गुँथी हैं। शिकारियों को जंगली जानवरों, हिंसा–आतंक, अस्त्रों–शस्त्रों तथा पहाड़ों–खाइयों से जूझना पड़ता था तो दैत्य और दानवों के मिथक बने। बाद में, प्रेम और परिवार के लिए देव–देवियों के कुल, देवपुत्र आदि के मिथक बनते चले गए।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोक परम्परा में जिन शब्दों, प्रतीकों, मुहावरों, लोकोक्तियों, बिम्बों, मिथकों आदि का प्रयोग हुआ है, वे कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में जन सरोकारों से अभिन्न रूप में जुड़े हुए हैं।

कैनमोबाइल

केनरा बैंक ने अपने ग्राहकों को आर्थिक रूप से अधिक सशक्त बनाने के लिए कैनमोबाइल (CNMOBILE) की शुरुआत की है। ग्राहक अब सभी बैंकिंग लेनदेन अधिक आसानी और निपुणता के साथ कर सकते हैं।

कैनमोबाइल आईएमपीएस के माध्यम से बैलेंस पूछताछ, मिनी स्टेटमेंट, इंट्रा बैंक फंड ट्रांसफर और इंटरबैंक फंड ट्रांसफर जैसी बैंकिंग सेवाओं की सुविधा प्रदान करता है।

कैनमोबाइल बैंकिंग 24X7 को हकीकत में बदलने जा रहा है। एप्लिकेशन मेनू संचालित है जो उपयोगकर्ता के लिए इसके विभिन्न विकल्पों के माध्यम से संचालित करना बेहद आसान बनाता है। डेटा एंड–टू–एंड एन्क्रिप्टेड है और लेनदेन कुछ ही क्षणों में हो जाता है।

केनरा बैंक अब आईएमपीएस (एनपीसीआई की एक योजना, जो तत्काल इंटरबैंक फंड ट्रांसफर को एक वास्तविकता बनाता है) की सुविधा प्रदान करने वाले अन्य सभी प्रमुख राष्ट्रीय बैंकों की लीग में शामिल है।

'कैनमोबाइल' अभी तक केनरा बैंक की प्रगति के मार्ग में उठाये गए कदमों में से एक उत्कृष्ट कदम है और इसने अपने ग्राहकों को अन्य तकनीकी उत्पादों की अधिकता के साथ– साथ उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने का भी कार्य

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता शृंखला

महादेवी वर्मा
(26 मार्च 1907 – 11 सितंबर 1987)

'ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता' शृंखला की इस आठवीं कड़ी में हम भारत में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त करने वाली हिंदी भाषा की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उन्होंने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद–सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्य जीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल–विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन–यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ–साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। (वे पशु पक्षी प्रेमी थी गाय उनको अति प्रिय थी।) वर्ष 2007 उनका जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था। गूगल ने इस दिवस की याद में वर्ष 2018 में गूगल डूडल के माध्यम से मनाया।

जन्म और शिक्षा

महादेवी का जन्म 26 मार्च 1907 को फ़र्रुख़ाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अत: बाबा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी – महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं से उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की।

कार्यक्षेत्र

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा हैं। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला–शिक्षा

के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन् 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं. इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुख पत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। वे हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध पन्थ से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया।

पुरस्कार व सम्मान

- 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि दी। 1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

- सन् 1969 में विक्रम विश्व विद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्व विद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्व विद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्व विद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया।
- इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए हैं। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।
- 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे।

राष्ट्रीय व्यवहार में
हिंदी को काम में लाना देश की एकता
और उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गांधी

एकाउंट एग्रीगेटर (एए)

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक
मानव संसाधन विभाग
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

वित्त मंत्री द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को एकाउंट एग्रीगेटर (एए) तंत्र में शामिल होने के निर्देश के बाद, अब सभी बैंक एकाउंट एग्रीगेटर (एए) तंत्र में शामिल हो चुके हैं। अत: यह क्या है तथा इसके संबंध में मूलभूत जानकारी हम सबको होनी जाहिए।

भारतीय रिजर्व बैंक का एकाउंट एग्रीगेटर ढांचा 2 सितंबर, 2021 को लाइव हुआ था। आरबीआई ने अकाउंट एग्रीगेटर्स को एनबीएफसी के रूप में वर्गीकृत किया है। एकाउंट एग्रीगेटर्स (एनबीएफसी – एए कहा जाता है), यह एकमात्र एनबीएफसी है जो सीधे तौर पर किसी भी वित्तीय सेवा से जुड़ी नहीं है और केवल वित्तीय जानकारी के प्रवाह की सुविधा प्रदान करती है। एनबीएफसी (एए) – कंपनी अधिनियम के तहत पंजीकृत कंपनी है और यह आरबीआई से लाइसेंस प्राप्त कंपनी होती है। यह कंपनी वित्तीय जरूरतों और उसके बीच के अंतराल को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यह कहा जा रहा है कि देश के वित्तीय ढांचे में यह क्रांतिकारी कदम होगा।

आरबीआई द्वारा शुरू किए गए एकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क का उद्देश्य एकाउंट एग्रीगेटर्स (एए) नामक डेटा बिचौलियों के द्वारा वित्तीय डेटा के उपलब्धता को अधिक सुलभ बनाना है। एकाउंट एग्रीगेटर्स (एए) उपयोगकर्ता की वित्तीय जानकारी को उन संस्थाओं से (जिसे वित्तीय सूचना प्रदाता (एफआईपी) से एकत्रित करेगा जो उपभोक्ता की डेटा रखती हैं तथा उपभोक्ताओं की सहमति प्राप्त करने के बाद उस उपभोक्ता के डेटा को (वित्तीय सूचना उपयोगकर्ता (एफआईयू)) अनुरोध करने वाली ऋणदाताओं के साथ साझा करेगा।

आरबीआई द्वारा शुरू किए गए अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क का उद्देश्य एकाउंट एग्रीगेटर्स (एए) नामक डेटा बिचौलियों का निर्माण करके वित्तीय डेटा को अधिक सुलभ बनाना है। एकाउंट एग्रीगेटर वित्तीय सूचना प्रदाता नामक उपभोक्ता डेटा रखने वाली कई संस्थाओं से उपयोगकर्ता की वित्तीय जानकारी एकत्र और साझा करेगा।

जब कोई व्यक्ति किसी ऋणदात्ता से कर्ज़ के लिए आवेदन करता है तो उस ऋणदात्ता कंपनी (वित्तीय संस्था) को ऋणी के पिछले वित्तीय विवरणों की आवश्यकता होगी ताकि उनकी साख की जांच की जा सके, पर यह जानकारी कर्ज़ लेने वाले के बैंक के पास होता है अत: नए ऋणदाता को पुन: सारी जानकारी एकत्रित करनी पड़ती है और इसमें काफी समय, खर्च तथा मेहनत लगती है तथा ऋणी को ऋण मिलने में विलंब हो सकता है। एकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क द्वारा इन कार्यों को आसानी से किया जा सकता है।

एए सूचना के प्रवाह को कैसे सुगम बनाएगा:

1. एफआईयू अकाउंट एग्रीगेटर से वांछित वित्तीय जानकारी साझा करने का अनुरोध करेगा
2. अकाउंट एग्रीगेटर उपयोगकर्ता से एफआईयू के साथ वित्तीय जानकारी साझा करने के लिए उनकी सहमति के लिए अनुरोध करेगा। खाता एग्रीगेटर को वेब–आधारित या मोबाइल ऐप–आधारित क्लाइंट का उपयोग करके ग्राहक के साथ सहभागिता करनी चाहिए।
3. यदि उपयोगकर्ता सहमति देता है, तो एए वित्तीय जानकारी साझा करने के लिए एफआईपी (इस मामले में उपयोगकर्ता का बैंक) से अनुरोध करेगा।
4. एफआईपी जानकारी को अकाउंट एग्रीगेटर को हस्तांतरित करेगा, जिसे एन्क्रिप्ट किया जाएगा, जो फिर इसे एफआईयू में स्थानांतरित कर देगा।

ऋणदात्ता के पास भावी उधारकर्ता का पूर्ण डाटा होने की वज़ह से वित्तीय धोखाधड़ी को कम करने में मदद करेगा।

एकाउंट एग्रीगेटर के लाभ:

एए ढांचा विभिन्न वित्तीय सेवाओं जैसे उधार, ऋण निगरानी, धन प्रबंधन, व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन इत्यादि पर आवश्यक निर्णय लेने में सहायता करता है, पेपर की उपयोगिता को कम/ समाप्त कर देता है। इसके अलावा, एए सूचना विषमता को कम करके वित्तीय सेवाओं तक पहुंच और पहले से कम सेवा वाले और असेवित क्षेत्रों को क्रेडिट की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

वर्तमान में, उधारकर्ताओं का वित्तीय डेटा कई विनियमित संस्थाओं के पास होता है और छोटे/मझोले तथा एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए इस डेटा को समेकित करना और इसे उधार देने वाली संस्थाओं के साथ साझा करना मुश्किल होता है। जिससे ऋण स्वीकृति में देरी हो सकता है और समय पर ऋण प्राप्ति संभव नहीं हो पाता है। इस समस्या के हल के लिए, एए ग्राहक के स्पष्ट सहमति के आधार पर वित्तीय डेटा को एकत्र करने और प्रस्तुत करने में मध्यस्था का कार्य करता है। एए सभी सहमत लेन–देन संबंधी डेटा को समेकित करते हैं, जिसमें उधारदाताओं के नकदी प्रवाह विवरण, खाता ब्यौरा, खाते में लेन–देल शामिल हैं। डेटा को तत्काल सीधे स्रोत से, छेड़छाड़ के बिना कम लागत पर प्राप्त किया जाता है। यह उधारकर्ता के लिए डेटा और अनुपालन लागत को सत्यापित करने की लागत और बोझ को कम करता है।

रिज़र्व बैंक सूचना प्रौद्योगिकी प्राइवेट लिमिटेड (ReBIT), रिज़र्व बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, जो खुले एपीआई–आधारित तकनीकी मानकों के एक सेट के साथ सामने आई है। जिसके द्वारा तकनीकी मानकों की प्रमुख विशेषताओं की सिफारिश की जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एए परिचालन तंत्र का डिज़ाइन डेटा–ब्लाइंड है; इलेक्ट्रॉनिक सहमति के आधार पर; गैर–अस्वीकार्य ऑडिट ट्रेल्स उत्पन्न करता है और इंटरऑपरेबिलिटी और स्तरीय नवाचार की अनुमति देता है जो प्रगतिशील और पूर्व–खाली हैं। एए के माध्यम से साझा की जाने वाली जानकारी पर ग्राहक का पूर्ण नियंत्रण होता है और उसका परिचालन तंत्र (सहमति/निरस्त) पर भी नियंत्रण होता है।

उपरोक्त उपाय सुनिश्चित करेंगे कि गोपनीयता के बारे में आशंकाएं और डेटा सुरक्षा के संबंध में चिंताओं का काफी हद तक निवारण किया गया है। एए फ्रेमवर्क से एफआईयू को भी लाभ होता है क्योंकि उन्हें वास्तविक समय के आधार पर संभावित ग्राहकों की वित्तीय जानकारी प्राप्त होती है जिससे वित्तीय सेवाएं प्रदान करने का टर्नअराउंड समय कम होता है और ग्राहकों की मांग को त्वरित गति से पूरा किया जा सकता है। एए ऋण देने वाले परिचालन तंत्र को मजबूत करता है।

हिंदी हमारे देश और भाषा की
प्रभावशाली विरासत है।

– माखनलाल चतुर्वेदी

* * *

विश्व भाषा के पथ पर हिंदी के बढ़ते कदम

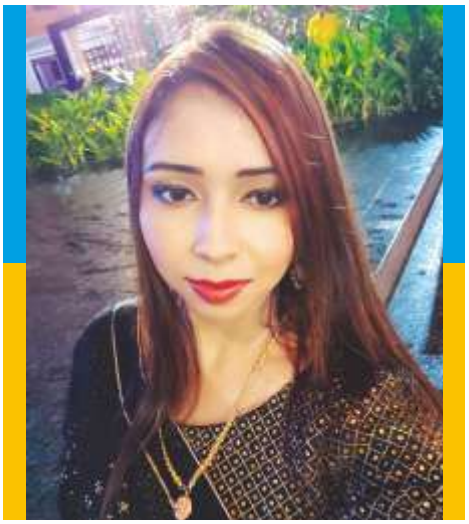

खुशबू गुप्ता
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, हावड़ा

भाषा मनुष्य के उच्चारण अवयवों से उच्चारित ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है एवं संप्रेषण करता है। सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा का संबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना मानव गूंगा है। यह मनुष्य की पारस्परिक विचार विनिमय की अनुवाद आवश्यकता है। भारतेंदु हरिश्चंद का कथन चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी/ बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी, आज भी चरितार्थ हो रहा है। वैदिक संस्कृत रूपी हिमालय से लौकिक संस्कृत उदित हुई जो प्राकृत, अपभ्रंश रूपी सरिताओं के रूप में प्रवाहित होती हुई अंतत: हिंदी रूपी सागर में सन्निहित हो गई। इस प्रकार हिंदी भाषा का उदय हुआ। विगत सहस्राब्दी काल से हिंदी भाषा की विकास यात्रा अजस्र भाव से गतिशील है। हिंदी जहां हमारे हिंदी साहित्य इतिहास के आदिकाल से महाकवि चंदबरदाई के रासो से लेकर विद्यापति की पदावलियाँ में अधिष्ठ हुई, वहीं सिद्धों की संध्या भाषा का आधार बनी एवं नाथों के योग एवं सामाजिक उपदेशपरक वाणी का सशक्त माध्यम भी बनी। हिंदी आदिकाल के रक्तरंजित इतिहास से दूर अमीर खुसरो की पहेलियां एवं मुकरियों के माध्यम से सहज भाव अभिव्यक्ति का साधन के रूप में प्रयुक्त हुई। हिंदी मध्यकालीन कबीर, सूर, तुलसी एवं जायसी जैसे संतों के विचारों को एक नया आयाम देने वाले महत्वपूर्ण साधन बनी तो वहीं दूसरी और यह मध्यकालीन दरबारी कवियों के आचार्यत्व को प्रकट करने के माध्यम के रूप में प्रयुक्त हुई। हिंदी जहां आधुनिक काल के भारतेंदु हरिश्चंद्र के नवजागरण का प्रमुख स्तंभ बनी तो वही महावीर प्रसाद द्विवेदी की संस्कृत चेतना को उद्घाटित करने का आधार भी बनी। हिंदी मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना तथा छायावादी कवियों की कल्पना बोर्ड से लेकर प्रगतिवादी कवियों की प्रगतिशील चेतना एवं प्रयोगवादी कवियों की प्रयोगधर्मिता को आधार प्रदान करने वाली एक सशक्त माध्यम बनी । 1957 की क्रांति से लेकर अन्य स्वतंत्रता संग्राम की मुखर लोकवाणी यही हिंदी थी। आज भी देश में आधुनिक चेतना का बीजारोपण करने का सशक्त माध्यम यही हिंदी है।

देश के लगभग समस्त राज्यों में हिंदी बोली लिखी एवं समझी जाती है, देश की लगभग 80% जनता द्वारा शिरोधार्य होने के कारण ही हिंदी जनभाषा के रूप में समादृत है। यही कारण है कि हिंदी को हमारे संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया गया। राजभाषा के आसन पर विराजमान होने के बाद से भारत के संपूर्ण राज्यों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रमुखता से प्रयोग ने हिंदी के विकास को एक नया आयाम प्रदान किया। हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए निर्मित संवैधानिक उपबंध एवं सरकारी प्रयास में हिंदी के विकास को नया आधार प्रदान किया है, इसकी लोकप्रियता में भी अपार वृद्धि हुई है, जिसके कारण हिंदी आज विश्व धरातल पर अपना पताका फहराने की ओर अग्रसर है। विश्वभाषाएं तो विश्व की उन प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिनमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए हैं किंतु विश्वभाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएं हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती है। विश्वभाषा से अपेक्षाएं हैं कि उसे बोलने– समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो। आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फीजी, मॉरीशस, ट्रिनिडाड, गयाना, सूरीनाम, इंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषी प्रचुर संख्या में है। हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मागधी, छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी उपजन भाषाओं के शब्द भंडार, मुहावरे और उसकी लोकोक्तियां रच–बस गई है। इसके अलावा हिंदी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों से घनिष्ठ संपर्क रहा है। हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस,

विश्व हिंदी सम्मेलन आदि जैसे कार्यक्रमों एवं लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं में संपूर्ण विश्व के लोगों के अंदर हिंदी को अपने हृदय में आत्मसात करने की भावना को सिर्फ जागृत ही नहीं अपितु इसे पुष्पित एवं पल्लवित भी किया है।

आज हिंदी का क्षेत्रफल कश्मीर से कन्याकुमारी, राजस्थान से त्रिपुरा, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसका प्रभाव क्षेत्र वैश्विक शिखर को स्पर्श कर रहा है। आज हिंदी बारह से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की मुख्य भाषा है। आज सात समुद्र पार तक एक चौथाई दुनिया में उसका परचम लहरा रहा है। हिंदी आज बाजार के सर्वाधिक लोकगृहित भाषा के रूप में अपना स्थान बनाए हुए हैं। यूरोप महाद्वीप से लेकर अमेरिका तक एवं पूर्व एशिया के सभी देशों में हिंदी की उपयोगिता एवं लोकप्रियता में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। वैश्विक परिदृश्य में भारत की बढ़ती उपस्थिति, हिंदी को गौरवान्वित करते हुए उसका उन्नयन कर रही है भूमंडलीकरण ने आज विश्व को एक गांव में परिवर्तित कर दिया है, जहां व्यापारिक प्रतिस्पर्धा अपने चरम स्थिति पर पहुंच चुकी है। भूमंडलीकरण के कारण बदलते परिवेश में भारत जैसे विशाल देश के बजार में पहुंचकर व्यापारिक सफलता अर्जित करने की होड़ में हिंदी को अपनाना विश्व के संपूर्ण देश के लिए आवश्यक हो गया है। इसके अतिरिक्त अनेक विश्वस्तरीय कंपनियाँ व्यापक बाजार मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही है जिससे हिंदी नित्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है ।

स्टार स्पोर्टस, टेन स्पोर्टस, डिस्कवरी आदि जैसे विशुद्ध अंग्रेजी चैनल का हिंदी में प्रसारण हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता एवं भूमंडलीकरण के दौर में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में बने रहने के परिणाम हैं। मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी एवं ट्रिनिडाड एवं टोबैगो में भारत से गए गिरमिटिया मजदूरों ने हिंदी को एक पवित्र गंगाजल के रूप में आत्मसात किया और इसे विश्व के इन भागों में प्रसारित करने एवं हिंदी को विश्व भाषा के पथ पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के लिए भारतीय संस्कृति संबंध परिषद (आईसीसीआर) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसने दुनिया भर के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पीठ की स्थापना की है। इन विश्वविद्यालयों में वे भारत से ही शिक्षक प्रतिनियुक्ति पर भेजते है, जो उस देश में हिंदी के प्रचार – प्रसार, अध्यापन, शोधकार्य इत्यादि में सहयोग करते हैं। यह प्रतिवर्ष योग्य हिंदी प्राध्यापकों का पैनल भी तैयार करते हैं। भारत में बनने वाली हिंदी फिल्मों एवं लोकप्रिय धारावाहिकों ने हिंदी को राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर लोकप्रिय बना दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, मोबाइल फोन, एवं सोशल साइटें भी हिंदी को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं ।

आज भारत ने विश्व में अपना अहम पहचान बना लिया है। यह गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का मुखिया है और सार्क परिषद का प्रणेता भी है और संस्कृत दृष्टि से भी विश्व का पथ प्रदर्शक और अगुआ है तो विश्व की छठवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। ऐसे देश की भाषा हिंदी है। इसलिए भारत के साथ निकटता स्थापित करने के लिए विश्व के अधिकांश देशों ने हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन पर जोर देना प्रारंभ कर दिया है। जापान का भारत के साथ व्यापारिक संबंध के साथ ही आध्यात्मिक जुड़ाव भी है और जापानियों के हृदय में हिंदी साहित्य पढ़ने के विषय में विशेष उत्कंठा भी विद्यमान है। यही कारण है कि हिंदी भाषा के साहित्यों का अनुवाद न सिर्फ जापानी भाषा में किया जा रहा है अपितु हिंदी भाषा का व्यापक शोध कार्य भी किए जा रहे हैं। जापान के सैकड़ों महाविद्यालयों में हिंदी का पठन एवं पाठन किया जा रहा है। कनाडा में हिंदी का प्रयोग बोलचाल से लेकर शैक्षणिक स्तर पर बढ़ गया है। विश्व भारती, नमस्ते कनाडा, हिंदी चेतना वसुधा आदि कनाडा में प्रकाशित होने वाली प्रमुख हिंदी पत्रिकाएं है । इटली के ओरिएंटल एवं मिलान जैसे विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन एवं अध्यापन प्रमुखता के साथ किया जा रहा है। नीदरलैंड के लायडन, एम्सटरडम, यूटरेक्ट, खोनिंगन विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन किया जा रहा है। फिनलैंड के हेलसिंकी, स्वीडेन के स्टॉकहोम, डेनमार्क के कोपेनहेगन विश्वविद्यालय में हिंदी के पठन–पाठन की व्यवस्था उपलब्ध है। हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता ने विश्व के अधिकांश देशों को हिंदी सीखने एवं इसे प्रसारित करने के लिए विवश कर दिया है । इसी प्रकार, हिंदी आज संपूर्ण विश्व की वाणी बनने के पथ पर अग्रसर है। हिंदी की उदारवादिता, सहज ग्राह्यता, सौहार्दता, परिवर्तनशीलता, अन्य भाषा के शब्दों को सहज आत्मसात कर लेने की प्रवृत्ति आदि जैसे गुणों ने इसे विश्व की एक लोकप्रिय भाषा बना दिया है। हिंदी में उपलब्ध विपुल साहित्य एवं ज्ञानवर्धक ग्रंथो ने भी संपूर्ण विश्व को हिंदी भाषा जानने और सीखने के लिए मजबूर किया है। जनसाधारण की भाषा होने के कारण हिंदी

बाजार की भी भाषा बन गयी है, जिसके कारण संपूर्ण विश्व में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है और यह विश्व भाषा बनने के पथ पर अग्रसर है। हिंदी एक विश्व भाषा है क्योंकि वह एक देश की राजभाषा होने के साथ–साथ अपने देश में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी बोली और समझी जाती है वैश्वीकरण के परिपेक्ष में हिंदी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तियां इस प्रकार दिखाई दे रही है। भौगोलिक आधार पर भी हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसके बोलने समझने वाले संसार के सभी महाद्वीपों में फैलें है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से अपना कार्य निष्पादित कर रहे हैं। हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अंतरराष्ट्रीय जगत छुपाए हुए है, हिंदी का साहित्य लेखन बड़ा है और लेखन का स्तर ऊंचा होता जा रहा है। इंटरनेट पर भी हिंदी स्वीकार्य और लोकप्रिय हो रही है हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्व भर में प्रसारित होने लगा है ।

परंतु विश्व भाषा के रूप में हिंदी के समक्ष अनेक समस्याएं भी हैं जैसे – विदेश से जिस अनुपात में भारतीय/हिंदू संस्कृति का ह्रास और पश्चिमी भोगवादी सभ्यता का विकास होता चला जा रहा है उसी मात्रा में हिंदी का प्रचलन काफी कम होता गया है। भारत में प्रवजन, पलायन करने वाले युवा बुद्धिजीवियों और श्रमिकों पर यह भाषा टिकी हुई है किंतु वे बड़ी तेजी से अंग्रेजियत के रंग में रंगते जा रहे है। उनकी अगली पीढ़ी हिंदी से अपरिचित है, जब इसे संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया तो ऐसा माना जाने लगा कि इसे देर–सबेर संयुक्त राष्ट्र संघ एवं संसार के अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में भी स्थान मिलेगा और अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में इसे भी मान्यता प्राप्त होगी लेकिन ऐसा नहीं हो सका। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई । यथासंभव अनुदान भी दिया गया लेकिन जिस लक्ष्य को लेकर उसकी स्थापना की गई थी वह अपनी लक्ष्य सिद्धि तक नहीं पहुंच सका । हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने की मुहिम की शुरुआत भारत के नागपुर में 10 जनवरी 1975 को आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में हुई। श्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में वर्ष 1977 में विदेशी मंत्री के तौर पर और वर्ष 2002 में प्रधानमंत्री के तौर पर हिंदी में भाषण दिया। 3 जनवरी 2018 को लोकसभा में पूछे गए प्रश्न के जवाब में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं अधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को स्थान दिलाने के लिए कुल 193 सदस्य देशों में से दो–तिहाई बहुमत यानी न्यूनतम 129 सदस्य देशों के समर्थन की आवश्यकता होगी। उसके साथ हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा के रूप में मान्यता दिए जाने के बाद होने वाला खर्च भी भारत को ही उठाना

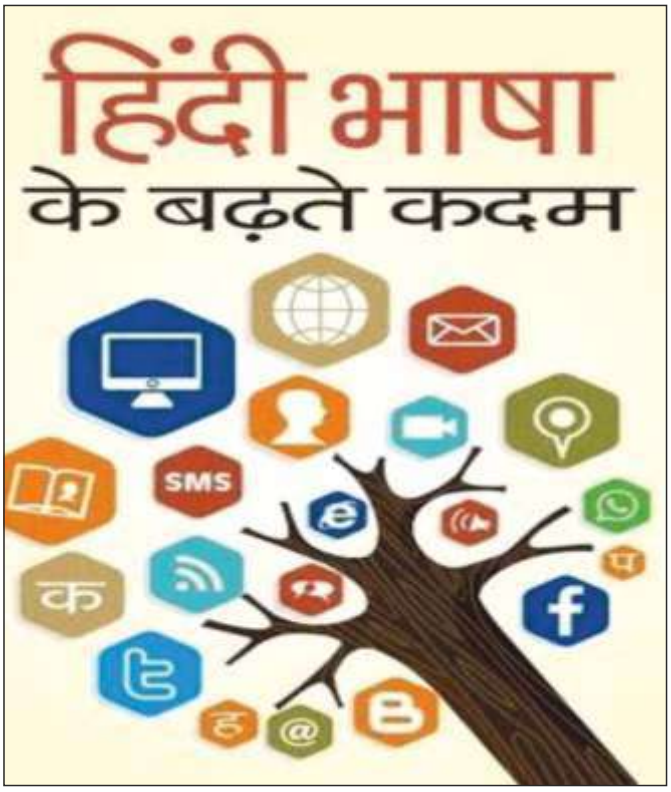

होगा। एक अनुमान के अनुसार इसके लिए शुरू में लगभग 1 अरब रूपये खर्च करने होंगे ।

वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में हिंदी की भूमिका सार्थक हो तथा उसका प्रयोग बढ़ सके इसके लिए पहले आवश्यकता हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की है केंद्रीय हिंदी निदेशालय में जो लिपि का मानकीकरण किया उसका उपयोग निदेशालय के अलावा कहीं नहीं होता। यहां तक कि सरकारी प्रकाशन में भी नहीं निजी प्रकाशकों की बात तो छोड़ ही देते है। आज हमें हिंदी के प्रति हमारे दायित्व पर भी विचार करना होगा आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के साथ–साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं अधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाए। हिंदी में यह शक्ति कब आएगी कि वह विश्व के लिए एक ऐसी भाषा बन जाए जिसकी उपेक्षा ना हो। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी हमें अपनी भाषा बोलते हुए गर्व का अनुभव होगा। हिंदी के सामने चुनौतियां हैं उन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियां समझें हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजना बने समय–समय पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हिंदी को विश्व में अपना स्थान बनाये रखने के लिए प्रयास करने की जरूरत है। इस प्रयास के लिए सभी को मिलकर आगे आना होगा।

सावन आया....

मो. जुहैब
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ

सूखी थी धरा कब से, गर्मी का प्रकोप छाया
हर तरफ आग लगी, जल रही हर एक काया
आकाश में बादल छाए, हर चेहरा मुस्कुराया
बिजली कौंधी, हुई गर्जन, बूंदों का फिर रेला आया
बूंदों ने छुई मिट्टी जैसे ही, सारा आलम महकाया
ज़मीं की बुझी प्यास, लो सावन का मौसम आया

चहुं ओर हरियाली छाई, जैसे धरा पर यौवन छाया
टर्र–टर्र करते मेंढक निकले, उनको ना कोई रोक पाया
किसान के चेहरे खिले, मन उनका खूब लहलहाया
बच्चों की निकली टोली, कागज़ की नाव को पानी पे तैराया

छतों पर लगी भीड़, मिलकर सबने जश्न मनाया
बाग बगीचे सभी भीगे, कुदरत ने अपना आंचल लहराया
वर्षा ऋतु ऐसी निराली, हर एक मन में फूल खिलाया
हर कोई बोल उठा, देखो सावन आया, सावन आया।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान

विश्वनाथ प्रसाद साहू
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर

भारत को विश्व पटल पर एक समृद्ध, सशक्त एवं उन्नत राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित करने की अनिवार्य अर्हताओं में से एक आत्मनिर्भर होना है। आत्मनिर्भरता से तात्पर्य अपने संसाधनों का उपयोग कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है, जहां अपार संभावनाओं के साथ अकूत संसाधन भी विद्यमान हैं, इन संसाधनों का सदुपयोग अभी भी विस्मयबोधकत्व की परिसीमाओं से घिरा हुआ है। यूं तो स्वदेशी अपनाने का नारा स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से ही जहन में है किंतु भारत के निवर्तमान प्रधानमंत्री ने इस नारे को यथार्थ के धरातल पर क्रियान्वित करने के लिए दिनांक 25 सितंबर 2014 में मेक इन इंडिया अभियान का श्री गणेश किया।

मेक इन इंडिया अभियान मूलतः निर्माण क्षेत्र पर केंद्रित है एवं इसका मुख्य उद्देश्य देश में उद्यमशीलता को बढ़ाना एवं तथा रोजगार सृजित करके आयात पर निर्भरता को कम करना है। जिससे दृष्टिकोण में भारत को महत्वपूर्ण निवेश एवं निर्माण, संरचना तथा अभिनव प्रयोगों के वैश्विक केंद्र के रुप में बदलना है।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में राजभाषा हिंदी:

संप्रेषण के सभी माध्यमों में भाषा सबसे अधिक प्रभावी माध्यम है। हमारा देश एक बहुभाषी राष्ट्र है जहां संविधान में भी 22 भाषाओं को तरजीह दी गई है। किंतु भारतवर्ष में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी ही है। यही कारण था कि 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा को रूप में अंगीकृत किया गया। हिंदी के संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि:

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

इसका अर्थ सरल है कि राष्ट्रहित के लिए हिंदी का प्रयोग श्रेयस्कर है। भारत सरकार ने राजभाषा के प्रचार–प्रसार तथा प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न संस्थाएं स्थापित की है, जो इस पुनीत कार्य की सिद्धि के लिए अनवरत प्रयासरत है।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए हिंदी प्रमुख संसाधनों में से एक है एवं हिंदी के बिना आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को मूर्त रूप दे पाना संभव नहीं है। हालांकि तमिलनाडू राज्य में राजभाषा नीति लागू नहीं होती फिर भी राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा हिंदी की प्रगति में उठाए गए देशव्यापी कदमों से प्रत्येक शिक्षित अथवा अशिक्षत वर्ग भले ही वो किसी भी राज्य से हो दैनिक दिनचर्या में रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग अवश्य ही करता है।

जनमानस को स्वदेशी अपनाने की लालसा तो है किंतु जागरूकता के अभाव में विदेशी उत्पादों को श्रेष्ठ समझकर उपयोग करने को विवश

हैं, विदेशी उत्पादों को ही श्रेष्ठ समझना एक कोरी कल्पना मात्र है। यदि भारत में बने उत्पादों की विशेषताओं प्रचार–प्रसार एवं विज्ञापन हिंदी माध्यम में करें तो वह उत्पाद अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंचेगा। जिससे उपभोक्ताओं के साथ–साथ संबंधित कंपनी को भी लाभ होगा। इससे मांग और आपूर्ति की संरचना यथावत बनी रहेगी तथा उपभोक्ता भी भारतीय उत्पादों के विषय में जागरूक होंगे एवं उपयोग करने में सहज होंगे। स्वदेशी कंपनी पतंजलि अपने उत्पादों में न केवल हिंदी के नामों का उपयोग करती है बल्कि उत्पादों पर भारत में निर्मित शब्द का प्रयोग करती है। यह कंपनी अत्यंत कम समय में बाजार में सबसे तेजी से उभरी है इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इसकी लोकप्रियता के अनन्य कारणों में एक कारण हिंदी में प्रचार–प्रसार करना भी है। हिंदी केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के दूसरे देशों में बोली एवं समझी जाती है जिनमें नेपाल, म्यांनमार, भूटान, संयुक्त अरब अमीरात, मॉरिशस, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, केनेडा, इंग्लैंड, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका आदि प्रमुख है, ऐसे में हिंदी में भारतीय उत्पादों के प्रचार–प्रसार से वैश्विक बाजार में भारतीय उत्पादों की पहुंच होगी और निर्यात बढ़ेगा।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत बहुत सी कंपनियों को यथोचित समर्थन देकर विकसित किया जा रहा है, भारतीय ऐप भी धीरे–धीरे विदेशी कंपनियों के विकल्प के रूप में सामने आ रहे हैं, जैसे भारतीय माइक्रोब्लागिंग ऐप बेंगलूरू की एक कंपनी है, इसे ट्विटर के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। इस ऐप ने अगस्त 2020 में भारत सरकार द्वारा आयोजित आत्मनिर्भर ऐप इनोवेशन चैलेंज में यह ऐप विजेता रही थी। प्रारंभ में इसे कन्नड़ में शुरू किया गया था एवं वर्तमान में यह ऐप हिंदी में भी उपलब्ध है।

बढ़ती आबादी के साथ भारत में सबसे बड़ा संकट रोजगार सृजन है आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना इस संकट का समाधान है तो हिंदी इसमें मील का पत्थर है। उद्योगों के लिए कुशल श्रमिकों के प्रशिक्षण में हिंदी के प्रयोग से लेकर उत्पाद को अंतिम उपभोक्ता तक पहुंचाने में हिंदी के प्रयोग को नकारा नहीं जा सकता। यदि हिंदी को समुचित सम्मान दिया जाए तो कई प्रकार के अनावश्यक व्ययों से बचा जा सकता है। बहुधा देखा जाता है कि उत्पाद एवं सेवाओं में केवल अंग्रेजी का अथवा अंग्रेजी के साथ हिंदी या अन्य भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। यदि अंग्रेजी को प्रतिस्थापित कर हिंदी का प्रयोग प्रमुखता से किया जाए तो अंग्रेजी के मुद्रण में लागत की कमी आएगी जिसका उपयोग गुणवत्ता के लिए किया जा सकता है।

आत्मनिर्भरता और हिंदी को सशक्त करने की होड़ में भारतीय फिल्म जगत एक मुख्य कड़ी है। हिंदी फीचर फिल्में देश में ही तैयार की जाती हैं जिनमें हिंदी में पटकथा लेखन, हिंदी संवाद को काफी सराहा जाता है। कोरोना के विषम काल को आपदा में अवसर की भांति देखा गया। जिसमें ओटीटी अर्थात ओवर द टॉप प्लेटफार्मों के जरिए वेबसीरिजों का हिंदी में प्रसारण किया गया। गौरतलब है कि यह उद्योग मनोरंजन के साथ– साथ लाखों लोगों को रोजगार भी प्रदान करते हैं। इसके अलावे हिंदी भाषा के क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। विदेशी कंपनियों ने देश में अपने उत्पादों का प्रचार–प्रसार करने के लिए हिंदी को अपना माध्यम बनाया है। इस प्रकार हिंदी में अनुवाद एवं इंटरप्रिटर की आवश्यकता आन पड़ती है जो एक अच्छा रोजगार प्रदान कर सकती है।

हिंदी के उद्भव एवं विकास के लिए महापुरूषों, विभूतियों, हिंदी साहित्य से जुड़े कवियों, निबंधकारों एवं अन्य पुरोधाओं ने जो बीज बोए थे, उसका सुखद परिणाम के रूप में प्रस्फूटन हुआ है। आज सैकड़ों गृह उद्योगों ने विभिन्न मानदंडों को पूरा करते अपने दक्षता को विश्वपटल पर रखा है, यह गृह उद्योग क्षेत्रीय भाषाओं विशेषकर हिंदी के बूते ही फल–फूल रहे हैं वो चाहे विज्ञापन में प्रयोग हो अथवा बोलचाल के माध्यम से। हिंदी ने सदैव देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाई है। भारत सरकार ने भी हिंदी को कारोबार से जोड़ने के लिए अथक परिश्रम किया है और इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए निरंतर प्रयासरत रही है। इसी का परिणाम है कि सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने अपने उत्पादों एवं सेवाओं को हिंदी में जन–जन तक पहुंचाते हुए आत्मनिर्भर भारत की इस मुहिम को एक नया आयाम दिया है।

अंततः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आत्मनिर्भर भारत के क्रियान्वयन की दिशा में राजभाषा हिंदी का योगदान बहुमूल्य है।

उम्मीदों के बादल

बिनोद कुमार बेदिया
वरिष्ठ प्रबंधक
तुपुदाना, रांची

बरसने वाले बादल सिर्फ गरज रहें हैं,
किसान और माटी पानी की बूंद को तरस रहे हैं।
आंखो से अश्रुओं की धारा बरस रहे हैं,
परंतु बरसने वाले बादल सिर्फ गरज रहें हैं।।

उम्मीदों के बादल छाए हुए हैं,
प्यासे परिंदे मौत के निकट आए हुए हैं ,
मल्हार विनती के गीत गाए हुए हैं,
परंतु बरसने वाले बादल सिर्फ गरज रहें है,
किसान और माटी पानी की बूंद को तरस रहें हैं।।

फसलों के बीज बोए हुए हैं,
और मेघराज अब तक सोए हुए हैं ,
चेहरों से सारे मुस्कान खोए हुए हैं,
परंतु बरसने वाले बादल सिर्फ गरज रहें हैं,
किसान और माटी पानी की बूंद को तरस रहें हैं।।

और अंत में कवि की अंतरात्मा पुकार रही है कि

ऐ मेघ तू बरस बरस, आंखे गई तरस तरस
जिंदगी हुई नीरस नीरस, ऐ मेघ तू बरस बरस,
हर तरफ अश्रुओं की धार है, मचा हाहाकार है,
ये अपने भक्तों से कैसा प्यार है, ये उम्मीदों की हार है,
इसलिए ऐ मेघ तू बरस बरस, आंखें गई तरस तरस।।

समाज और राष्ट्र की भावनाओं को
परिमार्जित करने वाला
साहित्य ही सच्चा साहित्य है।

– जनार्दनप्रसाद झा द्विज

दिनांक 14 सितंबर, 2022 को **हिंदी पखवाड़ा** का शुभारंभ श्री एल. वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा श्री के. सत्यनारायण राजू, कार्यपालक निदेशक एवं श्री बृज मोहन शर्मा, कार्यपालक निदेशक की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

दिनांक 16/08/2022 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 185 वीं राभाकास की बैठक में **केनरा ज्योति** के 32वें अंक का विमोचन करते हुए श्री एल.वी. प्रभाकर, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी साथ में श्री देवाशीष मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक, श्री शंकर एस. मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रधान कार्यालय के अन्य कार्यपालकगण।

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम
Canara Bank
Government of India Undertaking
Together We Can

पेश है
केनरा ai1
बैंकिंग सुपर ऐप

एक बेहतर जिंदगी के लिए

250+ से भी ज्यादा खूबियां

तुलना करके खरीदने की सुविधा
डैशबोर्ड विशेषताएं
लोन के लिए आवेदन करें
एफ डी/आर डी/टैक्स बचाने वाले खाते खोलें
निवेश सेवाओं का लाभ उठाएं
थीम मैनेजमेंट
यूपीआई स्कैन एवं भुगतान
रीचार्ज/बुकिंग

डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें
Google Play App Store से डाउनलोड करें

आपके सपने हमारे App ने

www.canarabank.com canarabank | canarabankofficial | canarabankinsta 1800 425 0018

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can

तुलना करके खरीदने की खूबियां
डैशबोर्ड विशेषताएं
लोन के लिए आवेदन करें
एफ डी/आर डी/टैक्स बचाने वाले खाते खोलें

आज़ादी का अमृत महोत्सव

1 ऐप
250+ विशेषताएं
एकमात्र ऐप जो आपकी बैंकिंग ज़रूरतों को आसानी से पूरा करे!
ऋण प्राप्ति, कैब बुकिंग, स्कैन करके यूपीआई भुगतान करने जैसी अनेकों खूबियां!

केनरा
केनरा ai1
बैंकिंग सुपर ऐप

आपके सपने हमारे App ने

www.canarabank.com 1800 425 0018 | 1800 103 0018
canarabank | canarabankofficial | canarabankinsta